ओ३म्

आर्योदय

विशेषांक

आर्य सभा मॉरीशस

२०१६

ARYA SABHA MAURITIUS

ARYODAYE - SPECIAL ISSUE - JULY 2016

वीर माताएं राष्ट्र की रक्षक हैं।

LES BRAVES MÈRES SONT LA SAUVEGARDE DE LA NATION

ओ३म् मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो में दुहिता विराट्
उताहमस्मि सञ्जया पत्यौ में श्लोक उत्तमः ।।

ऋग्वेद १०/१५९/३

Om ! Mama putrāh shatruhano atho me duhitā virāt
Utāhamasmi sanjayā patyaw me shloka uttamah.

Rig veda 10/159/3

Glossaire / Shabdārtha

Om - O Seigneur !, mama - mes, **putrāh** - fils, **shatruhanah** - exterminent les ennemis, **me** - ma, **duhitā** - fille, **virāt** - brille par ses qualités splendides, **ut** - et, **aham** - moi, **asmi** - je suis, **samjayā** - toujours victorieuse, **asmi** - je, **shlokah** - brille par mon renom (ma réputation) et ma gloire jaillisse, **patyaw** - dans le cœur de mon époux, **uttamah** - excellente / supérieure

Avant-propos

Le rôle, à aspects multiples, d'une mère de famille est primordial, sublime et exaltant. A part l'entretien de la maison, le soin et l'éducation de ses enfants, son dévouement à sa famille pour le bien-être de chaque membre, elle agit en tant que chef de famille en prenant la responsabilité de joindre les deux bouts avec toute sa débrouillardise.

En outre, elle se fait un devoir de transmettre les valeurs universelles et la spiritualité afin de forger ses enfants en de bons citoyens. Elle fait tout pour préserver l'honneur de sa famille.

Elle est la personne clé qui donne à son pays des hommes et des femmes qui fonctionnent dans tous les milieux de la société *('in all walks of life')*. Elle ne se sacrifie pas que pour sa famille, mais aussi pour son pays car elle a un sens inné de patriotisme.

De ce fait, la sécurité aussi bien que l'intégrité d'une nation repose sur le courage de sa gente féminine car ce sont les mamans qui donnent à leur pays des fils braves, héroïques et capables d'anéantir les ennemis.

A ce propos l'histoire de l'Inde témoigne silencieusement le drame de son peuple. Aussi longtemps que ce peuple vivait selon la culture Védique et pratiquait les enseignements des Vedas, il était en sécurité. Ce pays avait connu une prospérité sans précédent. Il était riche, puissant et respecté par les autres nations. Cette ère glorieuse de l'histoire était dûe à l'éducation, à la discipline, à la culture védique, à l'effort, au courage, au savoir-faire, à l'ingéniosité et au patriotisme de son peuple.

Sachons aussi que le caractère d'une personne ou d'une nation, dépourvu de l'intrépidité et de l'esprit héroïque est nul, sans aucune valeur, et ne sert à rien. Un tel individu ou une telle nation sera écrasé, dominé, persécuté et traité comme esclave par d'autres.

Le declin du peuple indien commença lorsqu'il délaissa les principes védiques et s'adonna à des pratiques à l'encontre des Vedas. Cela donna lieu à l'ignorance, à la superstition, à l'apparition de plusieurs sectes, à l'injustice, au sectarisme, à la discrimination, à l'immoralité, au préjudice, aux sacrifices des animaux et des êtres humains, et autres pratiques répréhensibles au nom de la religion. L'esprit de l'unité et de solidarité disparut et ce peuple sombra dans l'ignominie (Le déshonneur).

Conséquemment les envahisseurs étrangers qui, en comparaison du peuple indien, n'étaient qu'une quantité infime et ils étaient de nature hostile et cruel. Ils purent les conquérir et les réduire à l'état d'esclavage pendant plusieurs siècles.

Cela leur était possible parce qu'ils possédaient deux grandes qualités : L'unité et l'esprit héroïque. Les indiens étaient divisés et leur mauvais concept de la non-violence, du pardon, etc. avait anéantit leur esprit héroïque et les avait affaiblis moralement et physiquement.

Cependant, la non-violence selon les Védas, ne s'applique pas quand on a affaire à des ennemis ou des malfrats.

Interprétation / Anushilan :

Ce verset du Rig Veda évoque l'état-d'esprit, d'une mère de famille ayant accompli sa mission.
O Seigneur !
Mes fils sont des hommes braves, intrépides et capables d'anéantir les ennemis.
Ma fille possède une grandeur d'âme et une splendeur majestueuse. Quant à moi, je suis une grande gagnante et je règne dans le cœur de mon époux de par mon renom.

N. Ghoorah

CONTENTS

विषय-सूची

पृष्ठ Page

कर्म-दोष - श्री बालचन्द तानाकूर 2

Editorial - Shravani 2016 - Editorial Desk 3-4

रामज़ीन - श्री सत्यदेव प्रीतम 5-7

Annual Reports 2015 -- Sub-Committees --
Arya Jila Parishads 8-10
Education 10-13
Seva 13-14
Prachar 15-17

महर्षि दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में आर्यसमाज स्थापना का उद्देश्य - Courtesy - Saptahik Arya Sandesh, 28 March - 03 April 2016 18-19

Arya Yuvak Sangh de l'île Maurice 19

स्वामी दयानन्द ने क्या किया? - पं० राजमन रामसाहा 20-21

गृहस्थाश्रम - पंडित धर्मेन्द्र रिकाई 22

सत्यार्थ प्रकाश का संदेश - आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री 23-25

चतुर्थ समुल्लास - विवाह सम्बन्धी विषय - श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण 26

Satyartha Prakash Month - Shri Sookraj Bissessur..... 27

The Practical Applications of Yoga in Day-To-Day-Life...28-31

आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ : उद्भव, विकास एवं उनका सिंहावलोकन – श्रीमती शान्ति मोहाबीर 32-34

(१) श्रावणी महोत्सव का आरम्भ (२) कालजयी संत का कालजयी ग्रन्थ - सत्यार्थ प्रकाश – एस. प्रीतम 35

Ten Principles of Arya Samaj 36

आर्योदय

ARYODAYE

Arya Sabha Mauritius

1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,

Tel : 212-2730, 208-7504,
Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu
www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादक - Chief Editor :
डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
Dr Oudaye Narain Gangoo, *Ph.D,O.S.K, Arya Ratna*

सह सम्पादक - Editor :
श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
Shri Satyadeo Peerthum, *B.A, O.S.K, C.S.K., Arya Ratna*

सम्पादक मण्डल - Editorial Team :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
Dr Jaychand Lallbeeharry, *Ph.D*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
Shri Balchand Tanakoor, *P.M.S.M, Arya Ratna*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Shri Naraindra Ghoorah, *P.M.S.M*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanacharya

इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।

Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.

मुख्य सम्पादक

प्रकाशक - आर्य सभा मॉरीशस
१, महर्षि दयानन्द गली, पोर्ट लुई
फोन - २१२२७३०, फाक्स - २१०३७७८
वार्षिक शुल्क - रू० २००/-

Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

सम्पादकीय

कर्म-दोष

संसार में सभी लोगों के जीवन समान नहीं होते हैं। कोई दरिद्र तो कोई धनवान् होते हैं। कई लोग बुद्धिमान होते हैं तो कितने लोग बुद्धिहीन दिखे जाते हैं। किसी को अल्पायु प्राप्त है तो दूसरा दीर्घायु पा रहा है। इसी प्रकार कोई अति सुन्दर है तो बहुत से प्राणी कुरूप नज़र आते हैं। कितने लोगों का सम्पूर्ण जीवन आनन्दमय होता है तो अनेक व्यक्ति जीवन भर दुख, कलह आदि झेलते हुए दिखाई देते हैं। इन सब असमानताओं के पीछे कर्मों का दोष ही माना जाता है । कर्मों के रहस्य को समझ पाना बड़ा कठिन है ।

विश्व में अलग-अलग योनियों में प्राणी कर्मचक्र से घूम रहे हैं। कर्मफल की गति बड़ी गहन है । पाप-पुण्यों के कर्मानुसार ही जगत में सुख-दुख मिलता है । यह संसार कर्म की खेती है। जो जैसा बोता है, वैसा ही फल पाता है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, परन्तु फल की प्राप्ति में परतन्त्र है । जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है। जैसे धर्मानुसार कर्म करने से सुख, शान्ति तथा आनन्द ही आनन्द प्राप्त होता है और दोषयुक्त कर्म करने से दुख, कलह, संकट आदि मनुष्य को घेरे रहते हैं। इसीलिए सदा शुद्ध-कर्म करते रहना चाहिए।

कर्म मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। कर्मों से ही व्यक्ति की पहचान होती है। सृष्टि में इंसान को बहुत बड़ा वरदान मिला है। वह अपने पुरुषार्थ और अनुभव द्वारा जो चाहे प्राप्त कर सकता है। इसी कारण हमें दुष्कर्मों से बचकर श्रेष्ठ कर्म करते रहना चाहिए । बुरे कर्म करने से स्वयं भय, चिन्ता, शंका आदि समस्याओं में फँसे रहते हैं और अच्छे कर्म निभाने से सुख, शान्ति, सन्तोष और आनन्द का अनुभव करते हैं। अतः सत्यज्ञान पाकर कर्म-अकर्म के सम्बन्ध में पूरी जानकारी प्राप्त करना हमारा कर्त्तव्य है ।

सामान्य कर्म दो प्रकार के होते हैं – सकाम कर्म और दूसरा है निष्काम कर्म । किसी फल की इच्छा से किए जाने वाले कर्म को सकाम-कर्म कहते हैं और बिना किसी फल की कामना द्वारा प्रभु के कर्म मानकर किये जाने वाले कर्म निष्काम-कर्म कहे जाते हैं। गीता में भगवान् कृष्ण जी ने निष्काम कर्मों द्वारा मुक्ति का मार्ग दिखाया है। निष्काम कर्म ही व्यक्ति को भौतिक बंधनों से मुक्त करते हैं। निष्काम कर्मों से हमारी आत्मा स्वच्छ, निर्मल, धार्मिक होकर ऊपर उठती जाती है। ऐसे ही शुद्ध, पवित्र, उपकारी कर्म ही मनुष्य को मुक्ति का अधिकारी बनाते हैं ।

आधुनिक युग में अधिकतर लोगों के कर्मों में वासनाएँ और इच्छाएँ भरी होती हैं। वे अज्ञानतावश स्वार्थी बनकर बहुत से बुरे कर्म कर रहे हैं। जिनके परिणाम स्वरूप वे दुखी, चिन्तित, व्याकुल, तनावग्रस्त और रोगी दिखाई देते हैं। ऐसे ही भौतिक वासनाओं तथा लालसाओं में फँसकर आज इंसान दोषयुक्त कर्मों का बोझ सिर पर लादे जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उन्हें न भौतिक सुख-शान्ति, न ही आध्यात्मिक महा आनन्द प्राप्त है ।

यह मानव जीवन जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों रा फलस्वरूप मिला है। हमें इस अनमोल जीवन में वेद-विद्याएँ ग्रहण करके ईश्वरभक्ति में तल्लीन होना चाहिए, सद्बुद्धि, सुविचारों और श्रेष्ठ कर्मों द्वारा जीवन यात्रा पूर्ण करनी चाहिए।

श्रावण मास में श्रावणी महोत्सव का भव्य आयोजन करते वृहद यज्ञों तथा धर्मोपदेशों का भव्य आयोजन करते हैं। वेद स्वाध्याय श्रद्धा और भक्ति पूर्वक करते हैं । इस महोत्सव के उपलक्ष्य में हमें अपने कर्मों पर विचारने का अवसर प्राप्त होता है। हम हर प्रकार के दोषयुक्त कर्मों से बचकर पुण्य कर्म कमाने का संकल्प लेते हैं ।

परमात्मा से यही विनती है कि हमारे मन, बुद्धि, अन्तःकरण और आत्मा की शुद्धि इस पावन पर्व के प्रभाव से हो। हम बड़ी पवित्रता के साथ, सद्गुण-कर्मों द्वारा अपने जीवन को उज्ज्वल बनाने में सफल हों और अपनी संतानों को धार्मिक-शिक्षा प्रदान करके उन्हें संस्कारी बनाएँ तभी हमारा जीवन साकार होगा ।

बालचन्द तानाकूर

Editorial

SHRAVANI 2016

L'Arya Sabha Mauritius entame à partir du 20 juillet 2016 le Shrāvani Mahotsava pour la 51ème année.

1.0 LE MOIS DE SHRAVAN

Ce 5ème mois du calendrier Védique / Hindou est dédié à l'étude des Védas.
Le mot 'Shrāvan' est dérivé du mot 'shravan' qui signifie l'écoute.

La première étape de l'apprentissage est l'écoute. L'apprentissage implique tous les sens qui nous permet d'acquérir des connaissances (jnānendriyan) : (1) la langue – le gouter ; (2) le nez – l'odorat ; (3) les yeux – la vue ; (4) les oreilles – l'ouïe ; et (5) la peau – le toucher.

2.0 LES VEDAS

Le mot Véda est dérivé du mot 'vid' signifie connaissance.

Le mois de Shrāvan est considéré comme une période propice pour l'avancement spirituel ou moral de l'être humain. L'étude des Védas nous permet de nous connecter à ce trésor de connaissances.

OM stutā mayā varadā vedmātā pracho dayantām pāvamāni dvijānām I
Āyuh prānam prajām pashum kirtim dravinam brahmavarchasam I
Mahyam dattvā vrajata brahmalokam II (AtharvaVéda 19-71-1)

Signification :

Nous faisons les louanges des connaissances des Védas. Comme la maman, les Védas nous inspirent et nous ravitaillent de connaissances qui feront du bien à tous. Cet océan du savoir nous aidera à mener une longue vie remplie de force, de bonnes choses, d'animaux (vaches pour le lait, bœufs et autres pour les taches dans l'agriculture, les chevaux pour le transport, etc.), d'honneur, des richesses matérielles, des connaissances et l'intelligence pour le progrès physique, moral / spirituel et social de tous.

L'évolution des savoirs

De nos temps dites modernes, le lait est toujours l'aliment primé de la croissance, l'agriculture a évolué mais fait marche arrière vers le bio-agriculture, et les chevaux sont la puissance des moteurs (horsepower). Les Védas traitent des différents sujets, entre autres les sciences sociales, la bonne gouvernance, l'éthique, la philosophie, la méditation, l'économie, les mathématiques, l'économie, le transport (engins terrestres, marines, espaces, etc.), la communication, la médecine, chimie, physique et divers sujets scientifiques, l'environnement, la météorologie, la musique, et la méthodologie de l'apprentissage et d'étudier. ***Ces savoirs sont dans la forme des graines dont on doit cultiver et prendre soin afin qu'elles deviennent des arbres porteurs de fruits.***

La vertu ou l'éthique

Armés de ces connaissances mondaines et spirituelles, nous traiterons que sur le chemin de la vertu, la moralité, la droiture (*Dharma*) pour multiplier les richesses matérielles et spirituelles (*artha*). Ensuite nous en servirons de ces richesses pour notre bien-être et le bien-être de tous (*kāma*). La vertu pratiquée en 24/7 (pendant les 60 secondes de chaque minute) nous mènera vers le but final, le salut ou la libération du cycle de la naissance et de la mort (*moksha*).

Le manuel reçu de Dieu

Les Védas sont la source de toutes les connaissances mondaines et spirituelles transmises à l'homme par Dieu. Ils ont été pendant des millénaires transmis de bouche à oreille, d'où le nom de '*shruti*'. C'est le manuel donné à l'homme par Dieu pour que l'homme puisse se transformer en être humain en se servant des connaissances des Védas pour gérer sa vie, sa façon de faire et sa façon d'agir tout comme le livret d'instruction reçu à l'achat d'un équipement.

Les Védas - Patrimoine Culturel de l'humanité

Les Védas ne sont pas que pour les membres de l'Arya Samaj ou les Hindous. Les valeurs universelles que nous enseignent les Védas, le seul et unique Révélation, permet à l'homme de vivre en paix où régnera l'harmonie entre ses pensées, ses paroles et ses actions. Le RigVéda est reconnu comme le plus ancien texte de l'humanité. La tradition du chant Védique a été inscrite en 2008 sur la liste représentative du 'Patrimoine Culturel Immatériel de l'humanité, initialement proclamé en 2003.

Le perfectionnement de l'être humain

Celui qui pratique les enseignements Védiques développera une personnalité qui fera de lui un modèle, ainsi en l'imitant la famille, la société, la nation et le monde s'améliorera de soi. L'homme est la plus infime entité de notre société, la race humaine.

La globalisation

Nous réussirons le concept de la globalisation (*vasudaiva kutumbakam*) non pas en se limitant au commerce ou à la chose économique …mais en termes de convergence de caractères, d'actions et de tempéraments (*sangacchadhwam samvadadhwam smavomanānsi jānatām*). L'homme vivra les concepts de 'tous pour un et un pour tous' (*mitrasya chakshushā samikshāmahe*).

La pensée – le déclic de bonnes œuvres

Le Gāyatri Mantra qui est aussi appelé *Guru mantra* ou *Mahā mantra* nos indique la voie. *Dhiyo yo nah prachodayāt* : Nous demandons à Dieu de nous inspirer pour que nous puissions engager notre intelligence vers de bonnes pensées et de bonnes actions. Rappelons que nos paroles et nos actions découlent de nos pensées.

3.0 SHRAVANI & YAJNA

Le Yajna (havan ou oblations au feu) est prescrit comme une opération scientifique pour le bien-être de l'humanité et du monde. Le procédé consiste de la récitation des versets des Védas, à offrir le ghee (beurre clarifié), du sāmagri (des herbes médicinales, odoriférantes, etc.) au feu.

Yajna - les procédées scientifiques

La combustion d'une partie des offrandes (samidhā, ghee, sāmagri) produit de l'énergie qui permettra l'évaporation (transformer de liquide à la vapeur) et à la sublimation (transformer de l'état solide à la vapeur). Le ghee et le sāmagri contiennent des huiles et autres essences à promouvoir un environnement sain pour toutes les formes de vie sur notre planète.

Yajna - les bénéfices

Un piment dans le feu provoque l'éternuement parmi les gens sur une grande surface, il ne reste qu'à penser aux bénéfices du Yajna sur cette même échelle. Ceux-ci se résument comme suit :

- La récitation des versets des Védas au cours du Yajna tranquillise nos pensées et émotions …nous l'appelons …**la sono thérapie**.
- Les huiles et essences dispersées dans l'atmosphère sont repris dans notre système sanguin à travers nos poumons …nous l'appelons …**l'arôma thérapie**.
- Le feu nous expose à plusieurs couleurs de lumière …nous l'appellons … **la chroma thérapie**.
- La respiration longue et profonde au cours de la récitation des versets constitue …nous l'appelons … **les exercices respiratoires**.
- Les vapeurs dégageant du Yajna se mélangent à la vapeur de l'eau dans l'air et remontent dans les nuages. La pluie qui s'en suit est bénéfique à tous sur terre ...nous l'appelons … **l'ensemencement des nuages ou le cloud seeding**.
- Les vapeurs ont aussi l'effet de purifier l'air autour de nous en repoussant les virus, moustiques et autres, ainsi nous protège des maladies …nous l'appelons …**la fumigation**.

L'appel en cette fête de Shrāvani

C'est un appel à tous de bénéficier des différents programmes à travers les Arya Samajs de l'île et au sein des familles.

Que ce mois de Shrāvan, le Shrāvani Mahotsav
…augure une nouvelle ère dans notre vie ;
…nous sert d'occasion à acquérir les vraies connaissances (*shuddha jnaana*) ;
…nous mène vers de bonnes pensées, paroles et pratiques / actions (*shuddha karma*) ;
…nous amène vers la méditation sur le vrai sujet (*shuddha upaasnaa*) ;
…nous conduise aux valeurs universelles, énoncées dans les Védas ;
…nous transforme en être humain ;
…nous donne la maîtrise à nous positionner comme les agents du changement pour une meilleure société, juste et équitable.

Bonne lecture des Védas.

Editorial Desk

रामज़ीन

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

रतन रामज़ीन के पिता देशी थे। उस ज़माने में भारत से लाये गए गिरमिटिया मज़दूरों को इसी नाम से पुकारते थे। 'देशी' : यह केवल भारतीयों को ऐसा कहते थे। उन देशी लोगों का एक ही नाम होता था। अगर दो भाई आते थे तो अपने-अपने नाम से जाने जाते थे। जो रामज़ीन पहले मोरिशस आये थे उनके तीन बेटे हुए। सबसे बड़े का नाम रामलोचन रखा गया था, जो भरी जवानी में ही चल बसे और दूसरा शिवलोचन जो शादी करने के बाद दो लड़कियों के पिता बनने के बाद गुज़र गए । अब तो दोनों बेटियों में से एक भी जीवित नहीं है । रामज़ीन के सबसे छोटे बेटे का नाम रखा गया था रतन, पर उनका और एक नाम था दामोदर। इस प्रकार वे रतन दामोदर रामज़ीन नाम से अपने इलाके में मशहूर हुए ।

रतन जी का जन्म १८८६ में हुआ था जब भारत वर्ष में पंजाब प्रान्त की राजधानी लाहौर में महर्षि के भक्त-शिष्यों ने प्रथम डी०ए०वी० कॉलिज की स्थापना की थी और यहाँ मोरिशस में प्रथम आम चुनाव हुआ था जिसमें डा० ओनेसिफ़ो बोज़ार की पार्टी को ५ सीट मिली थी १० में से । १९ वीं शती के अंतिम दशकों में हिन्दू परिवार के इने-गिने बच्चे स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने के लिए दाखिल होते थे। जो जाते भी थे तो छठी कक्षा तक पहुँच नहीं पाते थे जिसके कारण अनेक थे ।

एक कारण तो यह कि क्रिस्च्यनों का उस वक्त दबदबा था। जो भी छोटी-मोटी नौकरियाँ होती थीं वे सभी गैर हिन्दू नौवजवानों को दे दी जातीं जो शेष रह जातीं नाम बदलने के बाद ही हिन्दू नवजवानों को दी जातीं। क्रिस्च्यन बनने के लिए और अनेक प्रलोभन दिये जाते । नौकरी प्राप्त करने के लालच में कितने हिन्दू नौवजवान अपने धर्म छोड़कर विधर्मी बन जाते । यह बात न केवल मोरिशस में घटी बल्कि १९ वीं सदी में जिन देशों में गन्ने के खेतों में काम करवाने के लिए हमारे पूर्वज़ों को ले जाया गया था, फिजी, गयाना, सूरिनाम, त्रिनिदाद-टोबेगो, आदि देशों में ।

रामज़ीन परिवार ने रतन को ऐसा नहीं होने दिया । उनका परिवार पेशे से हजाम था जिसे ठाकुर भी बोला जाता है। दामोदर ने अपने परिवार के पेशे को अपनाया और उसे ही अपनी आजीविका का माध्यम बनाया।

प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था जो १९१४ में शुरू हुआ था और १९१९ में खतम। सनसनी पैदा करने वाली खबरों का बोल-बाला था। नाई की दूकान ऐसी खबरों के लिए उचित जगह हुआ करती थी। वह भी रतन जैसे पढ़े-लिखे नाई हो तो क्या कहना !

प्रथम मोरिशसीय महाराज्यपाल ए०आर० ओसमान हुए । उन्होंने मोरिशस में छपने वाली, 'इण्डियेन कलचरल रिव्यू' के सन् १९७१ के जुलाई के अंक में लिखा था कि हमें अपनी पढ़ाई के बल पर या अपने बड़ों से बहुत कम राजनीतिक ज्ञान प्राप्त हो पाता था । परन्तु जब हम क्यूर्पिप के रॉयल कॉलिज के चन्द विद्यार्थी जिनमें शिवसागर भी होता था क्यूरपिप के रेल्वे स्टेशन पर स्थित रामजीन की दूकान में पहुँचते तो हमारी प्रसन्नता की सीमा नहीं रहती। हम विद्यार्थीगण अधिकतर गाँव के किसान पुत्र होते, बड़ी उत्सुक्ता से रामज़ीन नाई की बात सुनते थे। वे दुनिया भर के समाचार सुनाते, खासकर युद्ध सम्बन्धित बातें । भारत में काँग्रेस द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन का समाचार हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता । करमचन्द गांधी २१ साल दक्षिणा अफ्रीका में सेवाकार्य करने के बाद भारत लौट गए थे। नरम दल और गरम दल भारत की स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेज़ों से जुझ रहे थे। उसकी नाई की दूकान पत्र-पत्रिकाओं से भरी रहती थी, जहाँ लोग बरबस खिंचे आते ।

रतन जी भारत के आर्यसमाज के आन्दोलन से भी खूब अच्छी तरह प्रभावित हो चुके थे । शेर-ए-पंजाब लाल (लाला लाजपतराय) बाल (बाल गंगाधर तिलक) गरम दल के सशक्त नेता और पाल (बंगाल के विपिन चन्द्रपाल) क्रम से लाल, बाल, पाल का दबदबा था । भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस - महात्मा गांधी, गोपाल कृष्ण गोखले, स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुंशीराम) इन सब महापुरुषों की राजनीतिक कार्यों की सनसनी खेब-खबरें पढ़कर लोग झूम उठते थे। इधर मोरिशस में लाला दलजीतलाल, खेमलाल लाला, रामखेलावन बुधन आदि के सम्पर्क में आकर यहाँ के प्रबुद्ध युवक मोरिशस में भी सामाजिक परिवर्तन लाना चाहते थे, पर आर्यसमाज के आन्दोलन के शुरूआती दिनों में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा । क्योंकि सदियों के पाखण्ड ने जड़ जमा ली थी । अन्धविश्वास ने धर्म का रूप धारण कर लिया था।

अज्ञानता का गहरा अन्धकार छाया हुआ था । रामज़ीन को मालूम हो गया था कि ज्ञान के प्रकाश से अज्ञानता का अन्धकार भागेगा । यही काम भारत का आर्यसमाज कर रहा था और भारत के बाहर जहाँ भी आर्यसमाज स्थापित हुआ था वहाँ अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि का प्रयास धीरे-धीरे होना आरम्भ हो रहा था ।

पंडित काशीनाथ युग

प्रथम विश्व युद्ध ज़ोरों पर था। उसी बीच पंडित काशीनाथ किस्तो पहला मोरिशसीय हिन्दू लाहौर के डी०ए०वी० कॉलिज से धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर लौटे थे। तब तक मोरिशस की राजधानी पोर्ट लुईस में स्थापित आर्य समाज छः साल का हो गया था । यदि यह कहा जाए कि काशीनाथ जी के आगमन से उक्त छः वर्षीय समाज में जान आ गयी होगी तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। एक स्कूल के लिए भवन निर्माण करने हेतु सन् १९१६ में एक टूकड़ा ज़मीन खरीदी गई और बहुत जल्दी एक साधारण भवन बनाया गया जिसमें पंडित जी ने अपनी पत्नी को लेकर बच्चों को पढ़ाना आरम्भ किया। इन्हीं के सम्पर्क में आये थे हमारे इस जीवन चरित्र के नायक श्री रतन दामोदर रामजीन जो काशीनाथ से दो साल छोटे थे।

पं० काशीनाथ किस्तो अध्यापन के साथ-साथ प्रचार कार्य भी करते थे। उनसे प्रभावित होकर एक मेधावी नौजवान बेणीमाधो सतीराम जी भी उच्च धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत गए थे। कुछ ही वर्षों में बेणीमाधो हिन्दी और संस्कृत पढ़कर वापस आये तब तक आर्यसमाज का कार्य आगे बढ़ गया था। बढ़ते हुए कार्य को देखते हुए और मोरिशस के विद्यार्थियों के सम्पर्क में आये हुए पंजाब प्रान्त के विद्वान् प्रचारक और संन्यासी मोरिशस आने लगे थे। वैसे तो सर्वप्रथम श्री करमचन्द गांधी द्वारा भेजे गए मणिलाल डॉक्टर १९०७ ही में चले आये थे जब यहाँ पर आर्यसमाज स्थापित करने का प्रयास चल रहा था, पर कुशल नेतृत्व के न होने के कारण जम नहीं पा रहा था। मणिलाल की सहायता से बना तो फिर उसको संगठित एवं सुव्यवस्थित करने के लिए रंगुण वर्मा से रोग चिकित्सक डा० चिरंजीव भारद्वाज को बुलाया जो १५ दिसम्बर १९११ में ही चले आये जब मणिलाल जी टापू छोड़कर फीजी द्वीप समूह जा रहे थे। फिर उन्हीं के ठहराव के अन्तिम काल में पंजाब से ही स्वामी स्वतन्त्रानन्द आये । इन सब विद्वानों और संन्यासी का खूब प्रभाव पड़ा और सन् १३, १४ और १५ तक दस से ऊपर समाजों की स्थापना हो पायी थी। इन सबका प्रभाव खूब पड़ रहा था हमारे चरित्र नायक दामोदर रामज़ीन पर ।

सन् १९२५ में विदेश यात्रा विषय पर अनेक ग्रन्थों के रचियता और स्वयं दुनिया के विभिन्न देशों की यात्रा करने वाले धर्म प्रचारक जैमिनी मेहता (आगे चलकर स्वामी ज्ञानानन्द) अपनी दूसरी विदेश यात्रा के दौरान वर्मा से होते हुए मोरिशस आये थे। मेहता जी अच्छे लेखक तो थे ही बैरिस्टर होने के नाते अच्छे और कुशल वक्ता भी थे। उनका अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों पर समान अधिकार था। उस समय तक हिन्दू समुदाय में अंग्रेज़ी तथा फ्रेंच भाषा पढ़ने-बोलने और लिखने वाले चन्द नौजवान हो गए थे जिनमें विष्णु दयाल बन्धु थे, मोती मास्टर, पं० वेणीमाधो, पं० काशीनाथ, भूतपूर्व पोस्ट मास्टर जेनरल और आर्य सभा के महामंत्री श्री तिलक प्रसाद कालीचरण, विक्रमसिंग रामलाला (जो आगे चलकर सरकार के मंत्री बनें), खेमलाल लाला एवं दामोदर रामज़ीन आदि। रतन दामोदर रामज़ीन ने मेनिल में विशाल पण्डाल बनाकर वेद प्रचार करवाया था मेहता जी द्वारा इधर वाक्वा के आस-पास के लोग भी प्रभावित हुए बगैर न रहे । अनौपचारिक शिक्षा पाने वाले भी अनेक लोग मेहता जैमिनी के सम्पर्क में आये । वाक्वा, मेनिल, ओकूले, क्यूर्पीप आदि आर्य समाज का गढ़ समझा जाता था।

उसी समय समाज में कुछ आपसी अनबन के कारण पंडित काशीनाथ किस्तो को वाक्वा का केन्द्र छोड़ना पड़ा। अब उनकी आजीविका का प्रश्न खड़ा हो गया। सरकार की ओर से तो धार्मिक भत्ता मिलता ही नहीं था। अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ता था। पर काम तो करना था। मतभेद हो गया पर मन भेद नहीं हुआ था। उद्देश्य एक ही था और वह था आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाना। जैसे भारत के कॉंग्रेस में नरम और गरम दल थे ; भारत के आर्यसमाज में भी दो मत वाले थे। डी०ए०वी० कॉलेज वाले दल और गुरुकुल वाले।

रतन रामजीन जी, लाला दलजीतलाल जी, सोबी परिवार के कुछ सदस्यों के सहयोग से पंडित काशीनाथ को मेनिल समाज में लाया गया और एक खाली कमरे में मेनिल के और कास्तेल आदि बस्तियों के कुछ लड़कों को पंडित जी ने पढ़ाना आरम्भ किया। अब रात्रि पाठशाला के लिए लड़कों की संख्या बढ़ाने की चिन्ता हुई। हमने ऊपर लिखा है कि रॉयल कोलिज के विद्यार्थियों को रतन ठाकुर ने अपनी दूकान में राजनीतिक एवं सामाजिक ज्ञान प्राप्त करने को प्रेरित किया था। इस प्रकार उन की दूकान की ख्याति बढ़ गयी थी तो क्यों न कॉंफूक्रो से आने वाले नौजवानों को प्रेरित किया जाय ?

कॉं फूक्रो ग्वालों का एक प्रकार से केन्द्र था। वहाँ के लोग आस-पास के गाँवों से दूध बटोर कर क्यूर्पीप नगर में बेचने के लिए जाया करते थे। जैसे स्यन्तक दूध बेचने के बाद घर लौटने से पहले परियों का नाच देखने जाया करते थे।

हमारी लोक कथा के मुताबिक क्यों न उसी प्रकार कुछ दूधवाले जिनमें रामरतन लछुवा (आगे चलकर पं० रामरतन विद्यार्थी बनें), रामनन्न दुखराम और उनके चचेरे भाई आदि रतन रामजीन की दूकान में जाया करते थे जहाँ देश-विदेश के समाचारों की चर्चा होती थी। खासकर भारत की चर्चा होती थी। मौके से फायदा उठाकर रामजीन ने काँफूक्रो वालों को हिन्दी पढ़ने के लिए बुलाया। वे रात्रि में पैदल आकर पढ़ाई करने लगे। जब पढ़ाई में कुछ आगे बढ़ गए तो सोचा गया कि रात्रि में ठण्ड और बरसाती मौसम में आने-जाने की कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिए क्यों न काँफूक्रो में ही एक पाठशाला खोली जाय ? वयोवृद्ध सेवक दुखराम नन्दलोल के चचेरे भाई ने ज़मीन का एक टूकड़ा दान में दिया जहाँ फूस का एक छोटा झोंपड़ी नूमा मंदिर बनाया गया जिनकी स्थापना के लिए पंडित काशीनाथ किस्तो, पंडित गयासिंह, पंडित अनीरूद्ध शर्मा, मोहनलाल मोहित, दलजीतलाल आदि उपस्थित थे जिसका मंत्री पद १४-१५ साल के दुखराम नन्दलोल को सोंपा गया था। अब तो वे इस दुनिया में नहीं हैं पर उनकी कीर्ति का गान हम करते नहीं अधाते । आज उन का ज्येष्ठ पुत्र मास्टर नन्दलोल उक्त समाज के प्रधान हैं और उनकी सुपुत्री श्रीमती कूँजन महिला समाज की कर्मठ सदस्या हैं। दुखराम नन्दलोल की लम्बी सामाजिक सेवा के लिए १९९० में दीपावली के शुभावसर पर आर्य सभा मोरिशस ने आर्य भूषण पद से उन्हें सँवारा था।

रतन रामजीन ने पं० काशीनाथ से सलाह मश्विरा करके ४ से ६ बजे तक लड़कियों को पढ़ाने का निश्चय किया था। लड़कियों को पढ़ाना हिन्दू समाज में एक अजीबोगरीब बात समझी जाती थी पर आर्यसमाज ने इस (Taboo) प्रतिबंध को तोड़ दिया। आज देखिए मोरिशस के राष्ट्रपति महिला, राष्ट्रीय सभा (संसद-Parliament) की अध्यक्षा महिला । दिन व दिन पढ़ने वालों की संख्या में उत्तरोतर वृद्धि होने लगी । सोबी परिवार की दूकान का कमरा छोटा पड़ने लगा। मेनिल समाज के लोग एक टूकड़ा ज़मीन तलाशने लगे जिस पर एक मंदिर बनाया जा सके जिसमें हिन्दी की पढ़ाई हो और सत्संग भी हो सके। बहुत माथा-पच्ची की गई । मेनिल के दो-चार परिवारों से जिनके पास अच्छी खासी ज़मीन थी एक छोटी टुकड़ी ज़मीन की माँग की गई, पर किसी ने देना स्वीकार नहीं किया । रतन जी ने, जिस के पास थोड़ी ज़मीन थी उसीमें से पाँच पर्च (Perche) एक नाप है। ज़मीन देना स्वीकार कर लिया, वह भी अपने घर के सामने राजमार्ग के किनारे। आज उस ज़मीन का मूल्य लाखों रुपये का है। उसपर फूस का एक छोटा मंदिर सन् १९२७ में बनाया गया। आज उसी फूस के मंदिर के स्थान पर एक कोंक्रिट का पक्का भवन उसी राजमार्ग के किनारे खड़ा होकर दामोदर रामजीन की याद दिला रहा है ।

सोबी दूकान की पाठशाला मेनिल कन्या पाठशाला के नाम में परिणत हो गयी। १९३० में रामजीन की एकलौती पुत्री जिसका नाम सोनिया रखा गया था, उसका नया नाम 'वेदवती' पं० काशीनाथ ने दिया और उसी कन्या पाठशाला में १९३५ तक पढ़ाया। उसी साल उसकी शादी क्यूर्पीप में पं० नन्दलाल रामशरण से हुई ।

यहाँ हम एक मज़ेदार ऐतिहासिक घटना का जिक्र करना चाहते हैं। सन् १९२५ में मेहता जैमिनी यहाँ मेनिल में आये थे। वे आर्यसमाज की स्थापना की अर्द्धशती मनाने हेतु आये थे। मेनिल में रतन रामजीन तथा दलजीतलाल जो क्रम से समाज के मंत्री और प्रधान थे, के सहयोग से विशाल पण्डाल बनाकर प्रचार करवाया गया था उसी पण्डाल में फिर से स्वामी विज्ञानानन्द से भी वैदिक प्रचार करवाया गया था।

इस घटना का वृत्तांत १९९४ में विद्या स्वरूप रामजीन रतन दामोदर के सुपुत्र ने लेखक को सुनाया था। उस वक्त रतन रामजीन का एक मात्र पुत्र जीवित था।

उन्होंने इस लेख के लेखक को यह भी सुनाया था कि प्रचार के बाद रात्रि में उनके घर ही पर रहे थे। उस समय विद्या स्वरूप की अवस्था ११-१२ साल की थी। उन्हें साफ़-साफ़ याद था । यह बात १९२५ के अन्त और १९२६ के आरम्भ की थी। स्वामी विज्ञानानन्द की उपस्थिति में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया था। वेदवती रामजीन ने पहली बार साड़ी पहनकर अंग्रेज़ी में भाषण दिया था औरे दलजीतलाल की सुपुत्री ने हिन्दी में भाषण दिया था। लड़कियों की ओर से भाषण हो यह कल्पना के परे की बात थी। यह समारोह देफ़ोर्ज गली के एक चीनी के हॉल में मनाया गया था। पैसे तहसील करने के लिए एक नया तरीका अपनाया गया था। दरवाज़े के पास एक थाली रखी गयी थी। हॉल में प्रवेश करने वाले थाली में पैसे डालने के बाद अपनी जगह पर जा बैठते थे। जितने पैसे प्राप्त हुए थे, वे पंडित गयासिंह को सुपुर्द किये गये थे। कहा जाता है कि जब पंडित गयासिंह ने श्रद्धान्द अनाथालय बनवाया था तो उस पैसे का भी प्रयोग उस नेक काम के लिए किया था।

रतन दामोदर रामजीन के गुज़रे बहुत समय निकल गया। पर आदमी जो नेक काम कर जाता है वह कभी मरता नहीं । पाँच भौतिक शरीर छूट जाता है पर याद बनी रहती है। उसी स्मृति के सहारे हम अतीत में उसे झाँक सकते हैं, और प्रेरणा ले सकते हैं ।

ANNUAL REPORTS 2015

Sub-committees

ARYA ZILA PARISHADS

PAMPLEMOUSSES ARYA ZILA PARISHAD

Honorary President : Mr Deoduth Kheerodur
President : Dr Jaychand Lallbeeharry,M.A,M.Ed
Secretary : Mr Leckrajsing Ramdhony,BSc
Treasurer : Mr Jugduth Ramkhelawon

Activities

- Rishi Bodh Mahotsav - Bois Mangues AS
- Arya Samaj Sthāpnā Diwas -- Several Yajnas organised at level of district by Arya Samaj branches.
- Satyartha Prakash Mahotsav -- Morc. St. Andre Hamlet 197/129; Trois Boutiques Triolet A.S. 60; 9th mile Triolet A.S/AMS; Gde. Pte Aux Piments AS & AMS; Notre Dame Mt. Longue AS no. 278; Gowshal - Plaine des Papayes AS & AMS; Creve Coeur Mt. Longue AS & AMS; Morc. St. Andre AS 7 & 136; Fond du Sac AS/AMS 8/154; Bois Mangues AS/AMS 26/12; Morc. Hamlet 129; Mon gout AS 05; ILOT AS 20; Bois Rouge AS
- Vedic Bhajan Competition -- held on Sunday 17th May 2015 at the DAV College Morcellement St. Andre
- Shravani Mahotsav -- Poornahuti Yajna was held at the Fond du Sac Arya Mandir
- Three Days Gayatri Mahayajna on 25, 26, 27 September 2016 at Fond du Sac Arya Samaj
- Deepavali Mahotsav at DAV College Morc. St. Andre
- Ganga Asnan -- Yajna at Grande Pte. aux Piments Public Beach
- Shraddhanand Balidan Diwas - on the 25th December at the fond Du Sac Arya Samaj mandir.

रिव्येर जू राँपार आर्य ज़िला परिषद्

रिव्येर जू राँपार आर्य ज़िला परिषद् की बैठक हर मास के तीसरे सप्ताह को आर्य मन्दिर शाखा नं० २२ गुडलेन्स में शाम के ४.०० बजे लगती है।

मान्य-प्रधान : श्री इन्द्रनाथ इन्द्रदेव भोला
प्रधान : श्री विवेकानन्द लोचन
मन्त्री : श्रीमती सती रामफल
कोषाध्यक्ष : श्री हरिप्रसाद चमन

कार्यक्रमों की सूची

- संक्रान्ति का यज्ञ हर समाज में
- होली और स्वतन्त्रता दिवस के शुभ अवसर पर समाजों में यज्ञ तथा सत्संग के जरिये वेद प्रचार
- आर्य समाज स्थापना दिवस
- सत्यार्थप्रकाश मास के अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश की चर्चा समाजों में पीतों समाज नं. ६ में भव्य रूप से सत्संग
- श्रावण मास के दौरान अनेक समाजों में तथा घर-घर में यज्ञ, सत्संग और वेदों पर चर्चा। रिव्येर जू रांपार के युनिवर्सल कॉलिज के प्रांगण में पूर्णाहुति ।
- ऋषि निर्वाण दिवस Goodlands A.S. (२२) में
- गंगा-स्नान के शुभावसर आंस ला रे में बहुकुण्डीय यज्ञ
- श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर त्रियाँग Goodlands महिला समाज और आर्य समाज शाखा नं० १६२/२३७ में यज्ञ ।

फ्लाक आर्य ज़िला परिषद्

मान्य प्रधान - श्री बालमीक चुननी
प्रधाना - श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण
मंत्री - श्री राज लक्ष्मी रोश्नी
कोषाध्यक्षा - कुमारी स्नेहलाता ठाकुरी

कार्यक्रमों की सूची

- जनवरी - नव वर्ष के लिए हर समाज तथा घरों में यज्ञ । मकर संक्राति यज्ञ, विद्या आरम्भ यज्ञ अनेक समाजों में
- फरवरी - दयानन्द जयन्ती एवं ऋषि बोध हर समाज में एवं मार लाशो में दयानन्द गोष्ठी, पुरोहितों के साथ
- मार्च - आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर चार दिवसीय महायज्ञ किया गया।
- अप्रैल - राम नवमी के अवसर पर यज्ञ सम्पन्न और बच्चों के लिए बालदिवस के अवसर पर सभी पाठशालाओं के बच्चों द्वारा कार्यक्रम ।
- मई - श्रम दिवस के अवसर समुद्र के किनारे पर बहुकुण्डीय यज्ञ सम्पन्न हुआ ।
- जून - सत्यार्थ प्रकाश जयंती के अवसर पर बारह जून से कई जगहों पर तीन दिनों तक १२

समुल्लासों पर प्रचार का आयोजन विद्वानों द्वारा किया गया ।

- जुलाई और अगस्त में श्रावणी महायज्ञ मार लाशो में पूरे तीस दिनों तक समाज और समाज के सदस्यों के घरों में भी चलता रहा ।
- सितम्बर - गुरु विरजानन्द पर प्रवचन, यज्ञ-सत्संग एवं भाषण होता रहा। बच्चों के लिए मन्त्र प्रतियोगिता भी हुआ ।
- अक्टूबर - दीपावली महोत्सव ज़िला परिषद् की ओर से बृहद यज्ञ – सब समाज मिलकर बोनाकेई में हुआ और उस अवसर पर सामाजिक व्यक्तियों का सम्मान किया गया। जनमें एक विशेष महानुभाव जज भूषण दोमा जी थे।
- नवम्बर - गंगा स्नान के अवसर पर बेलमार के समुद्रतट पर यज्ञ एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, भाषण, भोजन के साथ ।
- दिसंबर - श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन भारद्वाज आश्रम में किया गया। युवक-युवतियों के साथ तथा समाज के सदस्यों के साथ साल की बिदाई उस अवसर पर युवक संघ के प्रधान श्री धरम गंगू जी द्वारा एक सुन्दर व्याख्यान हुआ।

मोका आर्य ज़िला परिषद्

मान्य प्रधान - श्री नरेन्द्र घूरा
प्रधान - श्री बालचन्द तानाकूर
मन्त्री - श्री रवीन्द्रदेव शिवपाल
कोषाध्यक्ष - श्री कृष्णदत्त सिबरण

- परिषद् की आठ बैठकें लगीं
- मोका प्रान्त के शाखा समाजों की गतिविधियों, समस्याओं और परिस्थितियों पर ध्यान दिया गया था।
- सायंकालीन हिन्दी पाठशालाओं में हिन्दी की पढ़ाई
- धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था पर चर्चा हुई
- परिषद के पूरे सहयोग से कॉलिज के छात्रों के साथ दो बार कार्यशालाएँ आयोजित की गईं
- परिषद् एवं शाखा समाज के सहयोग से दयानन्द दशमी, ऋषिबोधोत्सव, आर्य समाज स्थापना दिवस, सत्यार्थप्रकाश जयन्ती, श्रावणी महोत्सव, दीपावली एवं ऋषि-निर्वाण दिवस तथा श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का आयोजन किया गया। दीपावली के अवसर पर चार कर्मठ आर्य सेवकों को सम्मानित किया गया ।
- दीपावली एवं ऋषि निर्वाण के संदर्भ में रेडियो पर मंगलाचरण कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया ।
- पुरोहित-पुरोहिताओं के साथ पाँच बैठकें लगाकर यज्ञ, महायज्ञ, साप्ताहिक सत्संग तथा धार्मिक गतिविधियों के आयोजन पर चर्चाएँ हुईं।
- आर्य युवक संघ की स्थापना निमित्त दो गोष्ठियाँ की गईं।
- संगीत समिति के सहयोग से काँतोरेल में संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था।
- आर्य सभा के तत्वावधान में आर्य युवक संघ द्वारा १५ अगस्त २०१५ को राष्ट्रीय स्तर पर रामावतार मोहित हॉल में आर्य युवक दिवस परिषद् के सहयोग से आयोजित किया गया था।
- महिला समाज को सक्रिय बनाने के लिए विचार-विमर्श किया गया था।

GRAND PORT ARYA ZILA PARISHAD

President : Mr Deoduth Somna
Secretary : Pt. Pradeep Ramdonee
Treasurer : Mr Ashok Goreeba

The Parishad met nearly every month and major decisions taken at the level of Arya Sabha Mauritius were implemented

Activities

- All Vedic Festivals were celebrated at the level of the Parishad and the Arya Samaj Branches
- Classes to upgrade the level of Purohits conducted by Acharya Ouma and special classes held to give an indepth knowledge of Vedic Philosophy to those responsible of the Arya Samaj branches
- Shivir and Yoga Classes were held at the LP Govindramen Vedic Centre every month with the participation of youngsters
- Cultural Programmes and song competition was held.
- Parivarik Satsang held at different places every month.

PLAINES WILHEMS ARYA ZILA PARISHAD

President : Mr. Ravindrasingh Gowd
Secretary : Mr. Sonalal Ramdoss
No. of meetings : 12

Activities :

Monthly : Purnimā Yajna at Neergheen Bhawan
22.02.2015: Rishi Bodh & Dayānand Dashamee at Stanley Arya Samaj
22.03.2015: Navsamvatsar (Yugādi) & Arya Samaj Sthāpna Diwas at Ollier Arya Samaj
05.07.2015: Symposium on Satyārtha Prakash at the Ollier Arya Samaj

27.09.2015: Shrāvani Yajna and Discourses (Pravachan) at Curepipe Road Arya Samaj
15.11.2015: Deepāvali and Rishi Nirvān at Ollier Arya Samaj
22.11.2015: One-day Yajna by pandits & panditas
25.11.2015: Bahukundiya Yajna (15 Hawan Kunds) on the occasion of Gangā Asnān at Flic-en-Flac Public Beach
29.11.2015: Workshop for Teachers and Managers at Vacoas Arya Samaj Setting up of a Vidyā Samiti for the monitoring of the 20 Hindi Schools
17 & 18.12.2015 : A 2-day Workshop for youth at Vacoas Arya Samaj
20.12.2015: Shraddhānand Balidān Diwas at La Louise Arya Samaj

- Talks by members of the Managing Committee of the Sabha, Pravachans by Ach. Vinod Sharma, Ach. Dhananjay, Swami Suryadev across the Arya Samajs in Plaine Wilhems
- Collaborated with various Samajs at their Annual functions (Vārshik Utsav), various programs on the occasion of Arya parvas (festivals) & the Centenary celebrations of Reunion Arya Samaj
- Several programs for children (Bāl Vikās & Dhārmik Shikshā) conducted by Pt. Kheddoo & other resource persons
- Power Point Presentations by Mr. R. Gowd on Makar Sankranti and Astronomy and Astrology & Pt. Y. Chooromonay on Vedic Values
- Setting up of 2 new Arya Samaj Branches
- National Bhajan Competition : The Plaines Wilhems Bhajan Mandali & 5 Samajs participate, and Vacoas Bhajan Mandali bagged the 3rd Prize
- Establishment of a Vedic Centre at the Sangram Bhavan where regular Satsangs are organised for adults, Youth and children

ब्लाक रिवर आर्य ज़िला परिषद्

मान्य प्रधान : श्री मुसाइ रोहीत
प्रधान : श्री मेघराज गुमानी
मंत्री : श्री सोननजय चमन
कोषाध्यक्ष : श्री राकेश आचादु

वर्ष के दौरान अनेक कार्य किये गये।

- Le Morne में दीवाली एवं गंगा स्नान के अवसरों पर यज्ञ- सत्संग एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम ।
- Bel Ombre में भी दीवाली के अवसर पर यज्ञ-सत्संग धार्मिक कार्य के अतिरिक्त बच्चों द्वारा कार्य किये गये तथा गाँव में लगभग सभी लोगों को मिठाई बाँटी गई।
- Rivière des Galets में भी कार्य सुगमता के साथ हो रहा है। पंडित प्रकाश मुथरा के सहयोग से पढ़ाई चल रही, समय-समय पर बच्चों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हो रहे हैं।
- Camp Charlot में भी अनेक कार्यक्रम किये गये। छोटी पाठशाला है और कम बच्चे हैं लेकिन बड़ी अच्छी तरह से समाज एवं पाठशाला चल रही है। एक बृहद वार्षिकोत्सव किया गया जहाँ पर बच्चों को प्रमाण पत्र के साथ, पारितोषिक दिए गये।
- ऋषि बोध के शुभावसर पर यज्ञ एवं सत्संग हुए। इन कार्यक्रमों में भारी तादाद में महानुभाव लोग आये हुए थे, वे लोग कार्य को देखकर आश्चर्य में पड़ गये।

EDUCATION

विद्या समिति

प्रधान - श्री प्रभाकर जीऊथ
मंत्री - श्री विद्यानन्द रामफल

निरीक्षक – श्री/श्री विद्यानन्द रामफल, सूर्यदेव रामनोथ, देहानन्द सीबालक, धर्मराज भोला जी, सोनन्जय चमन जी, रामतहल हरिनाथ, कविराज खेदू, हरिसींग गोकुल ।

२०१५ के किए गए कार्यों का विवरण

- १२ बैठकें लगीं
- निरीक्षकों की गोष्ठी लगी जिसके दौरान निरीक्षण कार्य पर बल दिया गया ।
- पूरे मोरिशस में ४ जगहों पर अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के साथ गोष्ठी
- पहली की पुस्तक पर कार्य
- पहली से छठी कक्षाओं की परीक्षाओं का आयोजन
- सैद्धान्तिक परीक्षाओं का आयोजन
- पहली से पाँचवीं की पुस्तकों का लेखन किया गया

HINDU EDUCATION AUTHORITY

President : Mr Satterdeo Peerthum
Secretary : Mr Ravin Sewpal
Manager (P.C.K. - AVS) : Mr Mooneswar Seetaram
Manager (R.R. - AVS) : Dr Jaychand Lallbeeharry
No. of Meetings : 12

Activities :
Supervise the running of the Pandit Cashinath Kistoe Aryan Vedic Hindu Aided School, Vacoas (PCK-AVS) and the

Ramsaroop Ramgutty Aryan Vedic Hindu Aided School, Laventure (RR-AVS).

Responsibilities :
Maintenance & Development of infrastructure - Arya Sabha Mauritius
Curriculum / academics & day-to-day management – Ministry of Education

Statistics :

	PCK-AVS (Vacoas)	RR-AVS (Laventure)
Student population	1,200	350
CPE 2015 Pass rate	97.1%	89.3%
Headmistress	Mrs Mungrah	Mrs Bholah
Standards 1-VI		
Student population	1,200	320
Teaching personnel	51	13
Non-teaching personnel	4	7
Pre-primary unit		
Student population	60	31
Teaching personnel	4	2
Non-teaching personnel	1	1

Extra-curricular activities :
Yajna at beginning & end of school year, prior to examinations
Mentoring on the universal human values

Stakeholders of the Aryan Vedic Schools
Arya Sabha Mauritius (owner)
Students
Teaching & Non-Teaching Staff
Parents & Parent-Teachers Association (PTA)
Ministry of Education & Human Resources, Tertiary Education & Scientific Research

Dr Jugroo Seegobin D.A.V. College, Port Louis

Chairperson : Mr. Moonindranath Varma, M.B.E
Secretary : Mrs Yalini Devi Rughoo-Yallappa
Manager : Mr. Lutchmun Moteelall Woodun
Rector : Mr. Dharamdeo Moher

Staff force: Teaching 53; Non-teaching18; Administrative 5
School population : 800
SC Results (2015) : 92%
HSC Results (2015) : 77.3%
No of meetings : 4

Infrastructure :
Overall Rating of Specialist Rooms by PSSA: Minimum 86% & Average 95%

Extra-Curricular activities at regional and national level: Drama, Debates, essay competitions, Recitation & elocution contests, science competition, Quiz, Young Investor Award, Chess competition, Human Values education, Painting Competition, National Spelling Bee Competition, Camps, Conference, Seminar, Workshop, Talks, Power Point Competition, mural painting, Coral farming Project

Extra-Curricular activities at school level :
Yajna, Rishi Bodh; Blood donation, health medical check-up; Annual Sports Day; Prize Giving Day; Independence Day; Quiz Competition; Cross Country; Workshop with teachers / parents; French Day; Educational tours; First-Aid Courses; Junior Achievement by Barclays Bank; Food Day – Fund Raising activities; Talk & power point presentation on Human Values; Articles for Aryodaye (the newsletter of Arya Sabha Mauritius).

Stakeholders of the DAV College, Port Louis
Arya Sabha Mauritius (*owner*)
Students
Teaching & Non-Teaching Staff
Parents & Parent-Teachers Association (PTA)
Private Secondary Schools Authority

DAV COLLEGE MORC. ST. ANDRÉ

President : Dr. Neewoor Roodrasen
Secretary : Dr. Lallbeeharry Jaychand
Manager : Mr Chooramun Benyram
Rector : Mr Gobin Prabhatkar

Staff force – Mainstream : Teaching 71; Non-teaching 25; Administrative 9
Staff force – Pre-Vocational stream : Teaching 14
School population : 1158
SC Results (2015) : 65%
HSC Results (2015) : 78.4%
No. of meetings : 4

Infrastructure
Land area 5½ acres; Classrooms 34; Full-fledged Specialist Rooms 13
Playgrounds : Football pitches 2; Volleyball pitches 4; Football playgrounds 2; Basket ball pitch 1; Tennis court 1; Table tennis 2.

Subjects - School Certificate
English Language, Literature in English, French Language, French Literature, Mathematics, Additional Mathematics, Economics, Accounts, Hindi, Literature in Hindi, Business Studies, Sociology, Travel & Tourism, Biology, Chemistry, Physics, Agriculture, Food & Nutrition, Computer Science, Design & Communication, Art & Design, Fashion & Textiles, Hinduism, Sanskrit, Tamil

Subjects - Higher School Certificate
Principal Level : Literature in English, French, Hindi, Hinduism, French Literature, Biology, Chemistry, Physics, Mathematics, Computer Science, Food Studies, Economics, Accounting, Design & Technology, Art & Design, Business Studies, Design & Textiles, Sociology
Subsidiary Level: General Paper, English, French, Mathematics, Biology, Hindi, Hinduism

Extra-Curricular activities at school level
Yajna, Cross Country, Sports Day, Debating Club, Health Club, Environmental Club, Agricultural Club, Chess Club, Elocution Club, Hindi Drama Club, Foot-ball Club, Bad-

minton Club, Yoga, Tennis Club, Music Group

26.11.2015: Workshop on Hinduism at SC & HSC Level at which Rectors and Heads of Theology Departments of other Secondary Schools were invited.

12.12.2015: Tree Planting Ceremony and Inauguration of the Photo Voltaic plant in line the Maurice ile Durable & Green Mauritius Project; Inauguration of Tennis Court and Launching of School Magazine in the presence of Hon. (Mrs.) Leela Devi Dookun-Luchoomun, Minister of Education.

Stakeholders of the DAV College, Port Louis
Arya Sabha Mauritius (*owner*)
Students
Teaching & Non-Teaching Staff
Parents & Parent-Teachers Association (PTA)
Private Secondary Schools Authority

RISHI DAYANAND INSTITUTE

Time line :
2006 : Memorandum of Understanding signed between Kurukshetra University, India and Arya Sabha Mauritius
2007 : Setting up of the DAV Degree College renamed as the Rishi Dayanand Institute
2007 : Duly registered (since 2007) with the Tertiary Education Commission (TEC) and licensed to run courses leading to fully recognised degrees, namely- B.A & M.A (Hindi, English, Sanskrit, Philosophy and Sociology) under the complete programs of the Kurukshetra University (KU), Haryana, India.
2010 : 1st Graduation Ceremony

Mission statement :
To provide the best possible education and educational opportunities for all learners

Benchmarking :
All programs run are comparable with international norms.
KU prepares the examination papers.
Examinations are conducted / supervised by the Mauritius Examinations Syndicate (MES).

Academic Dean : Dr. Oudaye Narain Gangoo,*MA,Ph.D, O.S.K,* Former Senior Lecturer
Chairperson : Prof. Soodursun Jugessur, *CSK, GOSK, DSC, former Pro-Chancellor and Chairman of Committee, University of Mauritius*
Secretary : Mrs. Aryawattee Boolauky, *Msc; Educational Administration Technology, Secretary, RDI Board*

Aims & Objectives of the Board of Governors

- To craft the Development Plan
- To define strategies for the attainment of the vision and plans
- To develop the annual and triennial financial plans
- To control the levels of expenditure that may be authorised by the Planning and Finance Committee and Academic Council
- To carry out investigation on financial irregularities, if any
- To approve a proposal to change the character or size of the Institution
- To approve the co-option of governors and the appointment of parent governors
- To monitor and evaluate performance

The Sixth Graduation Ceremony
Number of graduands in 2015 (degrees from Kurukshetra University) :

- B.A (Hons) Hindi -19
- B.A (Hons) English-5
- B.A (Hons) Philosophy-6
- M.A Hindi-10
- M.A Philosophy-7

Other awards by the Rishi Dayanand institute:

- Shastree (equivalent to BA)-25
- Vachaspati (equivalent to Higher Diploma)-11

Infrastructure
RDI is a haven of peace where education is disseminated among students who are eager to explore the frontiers of knowledge with a lot of dedication and undertaking. It is adequately equipped to fulfill its mission. It has the necessary infrastructure and to offer and sustain its programmes.

Contribution of well-wishers and benefactors
A host of well-wishers who have at heart the advancement of learning in Mauritius have stepped forward, helping for the smooth running of RDI.

Donations towards development of infrastructure

- Mrs. Koolwantee Jhummon - to equip the library
- Mr. Savji Sunderji Vaghela - to improve the computer lab.
- Late Dr. Mrs. Hansa Gunessee – generously contributed a large sum of money for the extension the building of the college with ten classrooms.

Scholarships to assist needy students
Professor Soodursun Jugessur - for the award of a shield to the best student of M.A Hindi in the name of Shri Ramkreet Jugessur

Dr. Hansa Gunessee - 2 scholarships to M.A students
Mr. Savji Sunderji Vaghela - 1 scholarship
Mrs Mohinee Jeetun - 1 scholarship
Mr. Maighraj Goomanny - 1 scholarship
Mr. Rakal Bissessur - 1 scholarship

Arya Sabha Mauritius expresses its gratitude to the donors for their support in the smooth running of the RDI.

Maigraj Goomany Educational and Cultural Centre, Souillac Samiti

प्रधान - श्री सत्यदेव प्रीतम

- सुयाक भवन में प्रति मंगलवार को यज्ञ तथा सत्संग हुए।
- दीवाली के अवसर पर यज्ञ, भजन तथा मंत्री श्री शिवपाल जी द्वारा सन्देश हुआ । सुयाक अस्पताल में मरीज़ों को मिठाइयाँ बाँटी गयीं ।

- फूलबस्या आश्रम के आश्रितों को भोजन तथा फल वितरित किया गया ।
- ईलोत काँ जाब में हिन्दी पाठशाला तथा शातो बेनारस हिन्दी पाठशाला के बच्चों को प्रोत्साहित किया गया ।

Smt. L.P. Govindramen Aryan Vedic Special Educational Needs (SEN) School

President : Mr. Harrydev Ramdhony
Managers : Mr. Vinaye Ruggoo-Manager,
Pt. Dhaneswar Daiboo

Objective :

To oversee the running of Smt. L.P. Govindramen SEN Schools which cater for the educational needs of physically challenged children.

Salient features

	Student population	Teaching Staff	Non-Teaching Staff
3 Boutiques-Union Vale	17	3	2
Beau Vallon	15	3	2
Riche En Eau **	6	**	2
Total	38	6	6

** Run within the premises of Riche En Eau Government School

Activities :

- Usual academic classes, activity based learning adapted to the needs of the children
- Students attend the Ferney Resource Centre of the Ministry of Education at Ferney on a weekly basis where they are motivated to keep themselves physically active through physio-therapy.
- Students attend the Creativity Centre in Mahebourg on a fortnightly basis which caters for their mental development.
- The services of an Occupational Therapist is giving positive results.
- Two educational outings per term which serves to increase knowledge and break monotony.
- Music Day, Sports Day, Celebrations of the anniversary of the School during which eminent personalities and well-wishers were invited with a view to have a good media coverage and encourage donors and sponsors who have financed the purchase of various equipment.

SEVA

SANGRAM SEWA SADAN CENTRE

President : Dr. R. Neewoor, G.O.S.K, Arya Bhushan
Secretary & Officer-in-Charge : Mr. Rajiv Neewoor

No. of meetings : 9

Activities :

- 10 preventive campaigns across the island in collaboration with other NGO's, the Sugar Industry Labour Welfare Fund and the Ministry of Youth & Sports (Notre Dame Community Centre, Camp Carol Grand Bay SWC, Bois Marchand CC, Rose Belle SWC, Cite Anouchka Centre, African Town Riambel, Richelieu SWC, Nehru Nagar Recreational Centre, Tranquebar & Vuillemin); total attendance 630 persons
- A one-day exhibition / workshop at the Sangram Sewa Sadan (SSS), St. Paul, attendance 112 persons
- A one-day workshop at SSS on International AIDS Day, attendance 65 persons
- Four ½-day workshops & blood screening at SSS, attendance 113 persons
- 9 Home visits / outreach campaigns
- Field work by the Social Workers at different areas of Methadone Substitution Therapy Centres

92 Rehabilitated persons
196 New cases (9 alcohol & 187 drug addicts)
287 Follow-up cases (21 alcohol & 266 drug addicts) regularly attended by Medical Officer
82 Persons attending to Psycho-social programs
700 Persons attending to Individual Counselling
80 Persons attending to Group Therapy programs
45 Yoga Sessions
18 Persons on the average attending the yoga sessions

Pt. GAYASINGH ASHRAM

Shri Ravindrasingh Gowd - Chairperson
Smt Yalini Rughoo-Yallappa - Secretary
Smt Chandranee Buckhory - Manager
Shri Bissoondoyal Goolaub - Asst. Manager

No. of Meetings : 15
No. of Residents : 82

Activities carried out during the year :

- ➢ Maintenance of Kitchen drain to prevent any overflow of water; Regular debugging to prevent any infestation of residents' beds from bed bugs;
- ➢ Training of Health Carers and Attendants on Care Services, Communication, Hygiene, Discipline, Handling of disabled residents by Mrs. Priya Mossae;
- ➢ Setting up of an Education Sub-Committee to monitor the performance of student residents;
- ➢ Refurbishing of children's rooms; Upgrading & embellishment of courtyard;
- ➢ Transport arrangements for student residents attending schools for better monitoring of their whereabouts;
- ➢ Indoor & outdoor activities for inmates within and outside the Ashram;
- ➢ Well-wishers and donors offered lunch and dinner as well as conducted entertainment programs for residents;
- ➢ Replacement of old cupboards;
- ➢ Regular Meetings with Staff and Residents.

- ➢ Completion of electrical works allocated and replacement of old Curtains.
- ➢ Replacement of 20 matresses and 30 wooden beds by new metal ones.
- ➢ Visits and donations in cash and kinds and entertainment from many well wishers.

Meetings/ Workshops
The Chairman and the Manager attended several workshops and shared views with other NGO's on the services provided to the Residents and adopted as far as possible new skills for a better service to our residents.

J. BALLGOBEEN ASHRAM

President : Shri Peerthum Satyadeo
Secretary : Smt. Nundloll Culyanee
Manager : Shri Woodun Unesh Kumar (Rajesh)

Residents : 43

Staff force : 18 -- 1 Public Relation Officer, 2 Health Care Assistant, 2 Cooks, 1 Driver, 11 Attendants, 1 Night Attendant

Activities (Operational) :

- ➢ The services of a doctor twice weekly, two nurses four times weekly, a physiotherapist and a occupational therapist once weekly are catered by the Ministry of Social Security, National Solidarity & Senior Citizens Welfare and Reform Institutions
- ➢ Weekly Yajna for moral / spiritual development
- ➢ Outings and visits on regular basis
- ➢ Indoor games
- ➢ Musical / Cultural Programs by other NGO's
- ➢ Repair to corridor at the back of Ashram
- ➢ Construction of a laundry area under corrugated iron roof sheet
- ➢ Renovation works in bath room & toilet, remove and replace cracked tiles on wall and floor
- ➢ Tiles laid in corridor of the garage
- ➢ Transfer of gas cylinders to outside of building
- ➢ Fixing of Aluminium windows in the toilets at 1st floor
- ➢ Fixing of fly proof in ktchen and dining room
- ➢ Fixing of aluminium windows / door in Yajshala

FOOLBASSEEA BABOORAM ASHRAM

President : Mr Bhagwandass Boolaky
Secretary : Mr Jugdish Beekary
Manager : Mr Shridhar Jugurnauth

No. of meetings held : 8
Infrastructure :
Addition of a first floor to the existing building & construction of a Yajnashāla well in progress

Activities :

Running of a kitchen garden; Celebration of Mrs Foolbasseea Babooram Birthday Anniversary on 23 May; Celebration of Mother's Day; Celebration of the anniversary of the Ashram;

Visitors & Well-wishers
Amongst others: staff & students of the Souillac State Secondary School (S.S.S), Keats College, Sangelee S.S.S, Forest-Side S.S.S, Notre Dame College, St. Aubin S.S.S
119 well-wishers offered lunch, 86 dinner and another 86 tea and refreshments.

Dr Chiranjiv Bhardwaj Ashram

President : Mr. Dharamjay Domah
Secretary : Mr. Iswurlall Ramkalawon
Manager : Mr. Luchmeenarain Ramchurn

No. of Meetings: 12
No. of Residents: 15

Activities :

- ➢ Bimonthly medical check-up
- ➢ Services of Physio-Therapist & Occupational Therapist
- ➢ Weekly Yajna and programs to provide moral / spiritual support
- ➢ Visits by donors & well-wishers as well as relatives of residents who share some of their time and sponsor lunch, dinners, provide fruits and gifts to the residents
- ➢ Sponsors also contribute towards the infrastructural development, namely – the construction of a porch, the extension of the kitchen shelter
- ➢ Other NGO's join hands to improve the quality of services offered to the residents.

LE FOYER TROCHETIA ASHRAM

Mr. S. Peerthum - Chairman
Mrs S. Mungra - (Administrator)
Mr J. Mahadea - Manager

No. of Meetings - 7
No. of Residents - 31

Activities :

1. 1/1/15 - Yajna and distribution of new dress to resident.
2. 10/3/15 - National Day Celebrations
3. 23/6/15 - Parents Day - Cultural Programme and gifts to residents
4. 25/9/15 - Elderly Day - Distribution of gifts by Ministry of Social Security
5. Nov 2015 - Divali celebrations & distribution of Sweets

Visitors : Various NGO's, well-wishes & donors

PRACHAR

वेद प्रचार समिति

प्रधान - श्री बालचन्द तानाकूर
मंत्री - पंडित श्याम दायबू

• १० बैठकें लगी; जिनमें वेदों के प्रचार-प्रसार, आर्य पर्वों का भव्य आयोजन, धार्मिक गतिविधियाँ, धार्मिक शिक्षा निमित्त कार्यशालाएँ और संन्यासियों और आचार्यों द्वारा धर्मोपदेश इत्यादि कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये थे।

• गत साल शाखा समाजों द्वारा मकर संक्रान्ति, दयानन्द दशमी, ऋषि बोधोत्सव, होली, आर्यसमाज स्थापना दिवस, सत्यार्थप्रकाश जयन्ती, श्रावणी उपाकर्म, दीपावली एवं ऋषि निर्वाण दिवस और श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आयोजित किए गए । गंगा स्नान के अवसर पर अनेक सामुद्रिक तटों पर यज्ञ तथा

• रेडियो पर वैदिक वाणी, मंगलाचरण तथा अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। हमारे मुख्य महोत्सवों के संदर्भ में रेडियो और टेलिविजन द्वारा हिन्दी, फ्रेन्च, क्रियोली और अंग्रेज़ी में कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

• तीन संन्यासी और पाँच आचार्य भारत से श्रावणी उपाकर्म महोत्सव के अवसर पर अपना सारगर्भित संदेश दिये। देश के अनेक स्थानों में उनके प्रवचन हुए। उन आचार्यों द्वारा पुरोहित, पुरोहिताओं के साथ कार्यशालाएँ का आयोजन ।

• जिला स्तर पर पंडित-पंडिताओं के सहयोग से संन्ध्या एवं मन्त्रपाठ प्रतियोगिताएँ का आयोजन। डा० उदयनारायण गंगू जी द्वारा Bois des Amourettes Arya Samaj में उपनिषद् कथाएँ हुईं ।

• चन्द वरिष्ठ तथा उपवरिष्ठ पुरोहितों की नियुक्ति, उनके सहयोग से संन्ध्या एवं अग्निहोत्र मन्त्र सिखाने के केन्द्र खोले गए और २३ दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान के अवसर पर उनके छात्र-छात्राओं द्वारा आर्य भवन में बहुकुण्डीय यज्ञ ।

• स्कूलीय छुट्टी में युवाशिविर लगाकर धार्मिक शिक्षा प्रदान की गई ।

प्रेस और प्रकाशन समिति

प्रधान - डॉ० जयचन्द लालबिहारी
मंत्री - डॉ० विदुर दिलचन्द

ग्राहक संख्या : १४००

कुछ महत्वपूर्ण विषय जिन पर चर्चा हुई हैं, वह इस प्रकार हैं :

- आर्योदय की ग्राहक - संख्या बढ़ाने पर विचार ।
- हर शाखा के अधिकारियों से ग्राहक बनने का आग्रह करना ।
- आर्योदय का नवनीकरण करना, ज्यादा आकर्षक बनाना ।
- लेखों में विविधता लाना ।
- ग्राहकों की सूची को अद्यतन (update) करना ।
- बकाया ग्राहक शुल्क को वसूल किया जाना ।
- आर्योदय को निकालने में जो घाटा होता है उसकी पूर्ति करना।

धर्मार्य समिति

प्रधान - पं० मानिकचन्द बुद्धु
मंत्री - पंडिता धनवन्ती पोखराज

विवाह संस्कार पर पुस्तक

- पानेल समिति के छः पुरोहितों को अध्ययनार्थ एक-एक कॉपी दी गई साथ में
- विवाह संस्कार हेतु तैयार पुस्तक का अंतिम रूप देना।
- १० जुलाई २०१५ की बैठक में – पं० माणिकचन्द बुद्धु जी, पं० चुड़ामणि जी, पं० रिकाई जी तथा पंडिता पोखराज जी उपस्थित थे। विषय – विवाह संस्कार पुस्तक का अंतिम रूप देना । पं० चुड़ामणि जी को मुख्य-मुख्य विधि को अंग्रेज़ी में लिखित रूप में जोड़
- १८ दिसम्बर २०१५ की बैठक में - उपस्थित – पं० मानिकचन्द बुद्धु जी, पंडिता धनवन्ती पोखराज जी, पं० धर्मेन्द्र रिकाई जी तथा पं० यशवन्तलाल चुड़ामणि जी । सभी की स्वीकृति जानकर तब पं० चुड़ामणि जी को मुख्य विधि को अंग्रेज़ी में लिखने का निवेदन किया ।
- अंत्येष्टि संस्कार पर पुस्तक को पुनः प्रकाशित कराने पर विचार ।

आर्य पुरोहित मण्डल

प्रधान - आचार्य विरजानन्द उमा
मंत्री - पंडिता सत्यम चमन

- मई महिने में मातृ दिवस पर चर्चा । पितृ यज्ञ पर विचार विमई हुआ
- जून में सत्यार्थ प्रकाश के अन्तर्गत कार्यशाला
- जुलाई में श्रावणी पर्व के लिए, गुरु पुर्णिमा से लेकर दो मास तक बड़े तन्मयता से वेद प्रचार। प्रति मास

पुरोहित मण्डल में दो पुरोहितों द्वारा वाक्वर्धिनि सभा चली, जिसमें पुरोहितों का आत्म विश्वास जगाया गया । वेद प्रचार के लिए ऋषि निर्वाण के अवसर पर शाखा समाजों में यज्ञ का प्रचार । पुरोहित आवासीय शिविर दिसम्बर महिने में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर विचार ।

आर्य महिला मण्डल

मान्य-प्रधाना - श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण
प्रधाना - श्रीमती सती रामफल
मन्त्राणी - पंडिता विद्वन्ती जहाल

वर्ष भर नौ बैठकें लगीं ।

- शनिवार ३० मई को मातृ-दिवस – देश के वरिष्ठ महिलाओं को सम्मानित प्रधान-मन्त्री की पत्नी श्रीमती लेडी सरोजीनी जगरनाथ जी, श्रीमती माया देवी हनुमान जी, शिक्षा-मन्त्री श्रीमती लीलादेवी दूखन जी आदि माताओं
- जून महीने : निर्गिन भवन में गायत्री यज्ञ, महिला सम्मेलन और योग तथा प्राकृतिक चिकित्सा के कार्यक्रम
- जुलाई : कांच्येमिलितेर आर्य महिला समाज के सहयोग से एक सम्मेलन
- अगस्त : श्रावणी यज्ञ एवं महिला सम्मेलन त्रियोले तीन बुतिक आर्य समाज में Mare La Chaux समाज में तीस दिनों का श्रावणी महायज्ञ ।
- अक्टूबर : जिब्रैय आर्य महिला समाज में सम्मेलन ता० ३० नवम्बर को गुडलेन्स में एक आर्य महिला समाज
- दिसम्बर : बेलमार आश्रम में संगोष्ठी – श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर महिला गोष्ठी

SANGEET SAMITI

President : Mr Leckrajsing Ramdhony
Secretary : Pt. Shyam Daiboo
Activities :

- Bhajan (devotional songs)
- Competition Preliminaries at Regional/District Level - Semi Finals - Finals (held in Feb. 2016)
- Tie up with sponsors to support the activities
- Tie up with professionals to improve levels of our performing artists

Aryan Women Welfare Association

Chairperson : Mrs Poonum Sookun-Teeluckdharry

Activities :

- Design of a Pre-Marital Counselling Course in the form of a full-fledged MQA Approved course to be deliver free of charge, save ad except a nominal certification fee (launched in early 2016).

- Design of a simplified Code of Conduct based on the Satyaartha Prakaash for the family welfare (Parivaarik Kalyaan) launched on the day of Rishi Bodh to create better awareness among family members, especially women.

- June 2015 : Seminar to empower professional women to prepare homemade food without much hassle

- Joined hands with the Mahila Mandal and other NGO's in organizing talks on educational, physical and legal aspects such as at Goodlands Arya Samaj, Dubreuil Arya Samaj and Belle Mare Ashram.

Aryan Senior Citizen Committee

The Aryan Senior Citizen Committee was set up on 4th April 2015 by Arya Sabha Mauritius

President : Mr Indurdeo Balgobin
Secretary : Mrs Yallini Yallappa - Rughoo

Activities :

- 2nd & 3rd September 2015 - A Residential seminar at Pointe aux Piments Recreational Centre for Elderly.
- Meeting at Arya Sabha Mauritius on 16 December 2015 under the Chairmanship of Dr O.N. Gangoo
- A delegation of 36 members of the Association visited Rodrigues island from 21 to 25 March 2016.
- Various functions were organised -- President of Arya Sabha, and Mr R. Ramjee, Treasurer Arya Sabha during which the Rodrigues Arya Samaj was established.

Mauritius Arya Yuvak Sangh

President : Shri Dharamveer Gangoo
Secretary : Shri Bholanath Jeewuth

Activities :

- Team building & Workshop on Leadership
- Competitions on the occasion of Satyartha Prakash Jayanti
- Elocution contest
- Essay Writing Competition
- Yuva Divas at National Level on 15th August at St. Pierre
- Blood Donation at Pailles Arya Yuvak Sangh on

21.11. 2015
- Open Day at Babooram Ashram, Chemin Grenier
- Monthly Publication of Arya Yuva, e-newsletter
- Setting up of Plaine Wilhems Arya Yuvak Sangh

JAYDAAD SAMITI

President : Mr. Deelrazsingh Teeluck

Objectives

To ensure that all the immoveable properties belonging to the Sabha are properly secured, kept clean and put to optimum use.

Activities :

- ➢ Surveys on some sites to determine and fix the boundary lines, mainly to resolve disputes, such exercises will be ongoing as and when such issues arise.
- ➢ Monitor all lands which have been leased to/by Arya Sabha Mauritius.
- ➢ Surveys to assess the need-based demands for assistance from Samajs for the construction / renovation / extension of various mandirs.
- ➢ Encourage members of Samajs to mobilise funds from local / regional sponsors and well-wishers for such works.
- ➢ Samaj members are encouraged to come forward with some projects to make good use of bare-land properties in their respective regions.

Planning & Welfare Committee

Chairperson : Prof. Soodursun Jugessur
Secretary : Dr Vikram Seebaluck

Objectives :

- ➢ To consider current issues affecting society including family welfare and propose programs and projects for implementation.
- ➢ Key acvities the 'Membership Needs Survey' for ASM
- ➢ Proposal for hosting the Secretariat of an Africa Regional Arya Samaj in Mauritius (pursued further in 2016)
- ➢ The 'Membership Needs Survey' has the overriding objective to gather information on the needs of active, previous and potential members in view to reunify and strengthen the Arya Parivaar, in particular the youth, on national level.
- ➢ With a view to develop new programmes and activities to enlarge the membership base of the Sabha.
- ➢ Design of a survey questionnaire to the needful information.
- ➢ A representative survey population has been determined statistically which involves proportinate distribution by districts, membership sizes of the Arya Samaj Mandirs, age groups, gender and very importantly randomness in the selection process.
- ➢ A survey team comrising of district co-ordinators and resource persons for conducting the survey constituted
- ➢ Meetings on insight and guidance for undertaking this activity conducted
- ➢ It is expected to complete the 'Membership Needs Survey' in 2016

The chairman of each of the various samitis (sub-committees) have expressed: 'sincere appreciation to the whole team working on and for this committee, the President and all members of the Managing Committee and the staff of Arya Sabha Mauritius for their unflinching support.'

Available at Arya Sabha

Vedas

Sanskrit / Hindi -- Bhashya
(1) Maharshi Dayanand Saraswati
(2) Pt. Jaydev (DAV Publications)

Sanskrit / English -- Translation
(1) Swami Satyaprakash & Satyakam Vidyalankar (DAV Publication)
(2) Dr Tulsiram

RigVedadiBhashyaBhumika / Introduction to the Vedas

Hindi - Maharshi Dayanand Saraswati
English - Ghasi Ram

English (A collection of Vedic Verses in prose form)
The Holy Vedas by Satyakam Vidyalankar

आह्वान

दीप इक ऐसा जलाओ
वक्त की दहलीज़ पर
कर सके जो
बेधड़क संवाद
हर अंधियार से
सिर्फ़ झिलमिल ही नहीं बस
कर्म होता दीप का
तोड़ना अंधत्व भी तो
धर्म है संदीप का
रोप दो बीये किरण के
हर गली हर द्वार पर
खिल उठे मन
प्राण ज्योतित
भाव के श्रृंगार से
एक भी कोने में जीवित
तम का यदि अवशेष है
तो अधूरा दीप का हर यज्ञ
हर उन्मेष है
व्यर्थ सारे मंत्र
सारी साधनाएँ व्यर्थ हैं
जो न अनुप्राणित हो
मानव प्रीत के
संस्कार से

सीमा अग्रवाल, कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

महर्षि दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में आर्यसमाज स्थापना का उद्देश्य

उन्नीसवीं शताब्दी के सर्वाधिक प्रगतिशील जन आन्दोलन के अन्तर्गत आर्यसमाज की स्थापना की गयी। आइए, देखें आर्य समाज स्थापना के पीछे महर्षि दयानन्द जी क्या भावनाएँ निहित थीं और क्या उद्देश्य लेकर महर्षि जी ने इसकी स्थापना की थी – **आर्य समाज स्थापना का उद्देश्य** - आज जब कि आर्य समाज को स्थापित हुए १४१ वर्ष व्यतीत हो रहे हैं, यह कैसे पता चले कि आर्य समाज की स्थापना किस उद्देश्य को लेकर की गई थी ? संस्थाओं, समाजों, संगठनों तथा जन आन्दोलनों का इतिहास इसी दृष्टि से सुरक्षित रखा जाता है कि भावी पीढ़ी उस इतिहास के माध्यम से अपने अतीत को देखकर उससे कुछ प्रेरणा प्राप्त कर सकें। समाज के इतिहास से उसके उद्देश्यों का भी पता लगाया जा सकता है। आर्य समाज का उद्देश्य जानने के लिए हमारे पास दो साधन हैं – प्रथम है वह घोषणा पत्र जो इसकी स्थापना के बाद इसके पंजीकरण हेतु पंजीकर्त्ता रजिस्ट्रार को दिया गया था और दूसरा साधन है वे नियम जो इसकी स्थापना के समय निर्धारित किए गए थे। रजिस्ट्रार को जो घोषणा पत्र दिया गया था, उसमें आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य संसार में सत्य सनातन वेद-विद्या का प्रचार तथा प्रसार करना बताया गया था। उसके अनुसार संसार में वेदों का प्रचार करना आर्य समाज का उद्देश्य था क्योंकि संगठित और व्यवस्थित रूप से वेदों के प्रचार के लिए व्यवस्थित संगठन की आवश्यकता तीव्रता से महसूस की गई थी, इसीलिए आर्य समाज का गठन किया गया ।

आर्य समाज स्थापना के उद्देश्य को जानने का दूसरा साधन है, उसके नियम और उप नियम। आर्य समाज के उप नियमों को देखने से ज्ञात होता है कि आर्य समाज के उद्देश्य उसके नियमों में वर्णित हैं। उप नियमों की शब्दावली देखें – "इस समाज के उद्देश्य वही हैं जो इसके नियमों में वर्णित हैं।" अतः आर्य समाज के उद्देश्यों की खोज हमें आर्य समाज के नियमों से करनी होगी। अनेक लोगों को इस तथ्य का ज्ञान नहीं होगा कि आर्य समाज की स्थापना के वर्तमान दस नियम वे नहीं जो आर्य समाज की स्थापना के समय बनाए गये थे। उस समय अथार्त सन् १८७५ ई० में आर्य समाज के दस नहीं २८ नियम थे। इन २८ नियमों में इसके उद्देश्यात्मक और संगठनात्मक सभी नियम सम्मिलित थे। सर्वप्रथम इन नियमों को देखते हैं, उसके पश्चात् वर्तमान नियमों की चर्चा करेगें। इन २८ नियमों में से जो सबसे पहला नियम है, उसमें आर्य समाज के उद्देश्य का स्पष्ट उल्लेख है। इस नियम की शब्दावली इस प्रकार है – "सब मनुष्यों के हितार्थ आर्य समाज का होना आवश्यक है।" सन्दर्भ-आर्य समाज का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ३२५, पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति, इस नियम की शब्दावली बता रही है कि आर्यसमाज का उद्देश्य मनुष्य मात्र का हित करना है। आर्यों, हिन्दुओं अथवा भारतवासियों तक इसका हित करने का लक्ष्य सीमित नहीं है अपितु सम्पूर्ण मानव-जाति का हित करने का उद्देश्य व लक्ष्य है। आर्य समाज का यह उद्देश्य किसी वर्ग विशेष, जाति विशेष, सम्प्रदाय विशेष अथवा देश या काल विशेष तक सीमित नहीं। यह पूर्णतः सर्वजनीय एवं सर्वदेशीय है। अतः आर्य समाज की स्थापना के पीछे मूल भावना मनुष्यमात्र का हित साधन है।

विश्व भर के मनुष्यों का हित चाहने वाली अति कल्याणकारी यह संस्था भी अपने सर्वहितकारी उद्देश्य के कारण विश्व-संस्था का स्थान पाने की पूर्ण हकदार हैं। पं. इन्द्रजी विद्यावाचस्पति के अनुसार – "यह विस्तृत उद्देश्य है जिससे आर्य समाज की स्थापना हुई। संसार में इससे बढ़कर व्यापक उद्देश्य और नहीं हो सकता।" (आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग, पृष्ठ ९२) वस्तुतः इससे पहले इतने व्यापक और विशाल उद्देश्य के बारे में कोई सोच तक नहीं सकता था। किन्तु इसके संस्थापक की तो बात ही निराली है। वे इतने महान् तथा व्यापक उद्देश्य से भी संतुष्ट नहीं थे। ज्ञातव्य है कि ये २८ नियम मुम्बई के आर्य जनों ने बनाए थे, महर्षि के बनाए नहीं थे। महर्षि, आर्यजनों द्वारा बनाए गए इतने व्यापक और महान नियमों से संतुष्ट क्यों नहीं हुए, यह विचारणीय है। मनुष्य, मनुष्य मात्रा का हित साधे, यह छोटी बात नहीं। कविवर मैथिलीशरण गुप्त तो मनुष्य उसी को मानते हैं जो मनुष्य के हित प्राण तक न्यौछावर कर दे। यथा-यही पशु प्रवृत्ति है कि आप, आप ही चरे । वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

आर्य समाज के संस्थापक देव दयानन्द का चिन्तन इससे आगे तक जाता है। मनुष्य का यह हित साधन मनुष्य तक ही सीमित क्यों रहे, प्राणीमात्र तक क्यों न जाए ? प्राणीमात्र ही नहीं, महर्षि तो जड़-चेतन सभी का हित चाहने वाले थे। वे तो, "आत्मवत् सर्वभूतेषु" की भावना से प्रभावित थे। तभी तो उन्होंने लिखा था कि "मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझें।" अतः २४ जून १८७७ को

आर्य समाज, लाहौर की स्थापना के अनन्तर वर्तमान दस नियमों में आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य को बदल दिया । अब संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य हो गया। यद्यपि मुम्बई वाले नियम भी कोई संकुचित और संकीर्ण नहीं थे, पर लाहौर वाले वर्तमान नियम और भी उदार और व्यापक उद्देश्य लिए हुए हैं। छठे नियम में इसके उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है, जो इस प्रकार है- संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अथार्त शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

मुम्बई में रजिस्ट्रार को दिये घोषणा पत्र वाले उद्देश्य अथार्त् संसार में वेद का प्रचार करना, जो इसको परम धर्म का रूप देकर तीसरे नियम में प्रकट कर दिया। यथा – "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है", वेद का प्रचार पढ़ाने और सुनाने से ही तो होगा, पर पढ़ा और सुना वही सकता है जो प्रथम स्वयं पढ़े और सुनेगा। इसलिए वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को परम धर्म घोषित कर दिया। जहाँ तक संसार के उपकार की बात है, संसार को वेदमार्ग पर आरूढ़ करने से बढ़कर भी संसार का उपकार हो सकता है, यह बात सोची भी नहीं जा सकती। संसार का उपकार यही है कि उसे सीधे-सच्चे निष्कन्टक वेदमार्ग का पथिक बना दिया जाये, तभी आर्य समाज का उद्देश्य पूर्ण होगा। आर्य समाज के उद्देश्य और भी हैं, पर संक्षेप में इतना ही।

यशपाल आर्य बन्धु'

"लोगों को इस तथ्य का ज्ञान नहीं होगा कि आर्य समाज की स्थापना के वर्तमान दस नियम वे नहीं जो आर्य समाज की स्थापना के समय बनाए गये थे। उस समय अर्थात् सन् १८७५ ई० में आर्य समाज के दस नहीं २८ नियम थे। इन २८ नियमों में इसके उद्देश्यात्मक और संगठनात्मक सभी नियम सम्मिलित थे।"

Courtesy : Saptahik Arya Sandesh, 28 March - 03 April 2016
(Contributed by Shri Harrydev Ramdhony)

Arya Yuvak Sangh de l'île Maurice

Les activités marquant le mois dédié à l'étude du Satyartha Prakash.

Le dimanche 26 juin 2016 a été une journée faste pour l'aile jeune de l'Arya Samaj. Les jeunes, communément appelés 'Yuvak / Yuvati' avaient concocté un programme culturel de haut niveau sur le 'SATYARTHA PRAKASH' (La Lumière de la Vérité), le chef-d'œuvre de Swami Dayanand Saraswati.

Trois Boutiques Triolet :

Après le yajna, le programme a débuté tambour battant devant un parterre d'invités et une audience attentive. La présentation fut assurée par Mlle. Karishma Ramnauth. Elle a par ailleurs, écrit et lu un poème d'une haute facture sur le végétarianisme.

Puis, il y a eu la récitation des cantiques védiques (mantras) par les sœurs Riddhi, Niddhi et Siddhi. Ensuite, les frères Chummun ont régalé le public avec une démonstration musicale sur tabla et 'santoor'.

Une autre fusion musicale bien acclamée s'est fait suivre sur tabla et sitar. Enchaînant avec le programme, le Président de Mauritius Arya Yuvak Sangh, M. Dharam Gangoo a souligné que le Satyārtha Prakāsh recommande de ne pas porter de bijoux sur soi durant le temps d'apprentissage. Aujourd'hui, ces bijoux sont les téléphones portables, tablettes et autre gadgets. Les étudiants utilisent ces appareils ayant de prix mirobolants. Gare aux conséquences! On devient proie facile des vols avec violence. Le Secrétaire, M. S.Nowlotha a mis l'emphase sur l'éducation comme préconisée par le Swami Dayanand. La profondeur de l'éducation détermine la hauteur de connaissance de l'homme. La journée fut aussi ponctuée par l'excellent quiz master Roshan Hurnaum qui a ajouté une touche humoristique à l'évènement.

St. Paul, Vacoas

Tout s'est passé sous la férule de Pandit Khedoo. Après le Yajna par les élèves du Gurukul. Il y a eu quelques discours et des présentations par les jeunes, sous l'oeil attentif de M. Dharam Gangoo.

Le clou de la journée reste la présentation époustouflante du Yogi Bramdeo Mokoonlall Darshanacharya. Il a mis l'emphase sur les points saillants de la philosophie Védique. L'apprentissage et la formation ont été le maitre mot du Yogi.

स्वामी दयानन्द ने क्या किया?

पं० राजमन रामसाहा, आर्य भूषण

अपने माता-पिता के अर्जित सुख की छाँह तले वे जीवन बिता सकते थे । उन्होंने युवावस्था में जब एक बार उस छाँह को त्याग दिया तो फिर से उधर मुड़कर भी नहीं देखा। वे ज्ञान के पिपासु थे । वे ज्ञान प्राप्त करने में बिन माता-पिता के सहयोग से स्वयं ही अपने पैरों खड़े थे। वे खाने-पीने, रहने आदि के सब प्रकार के दुख सहे थे । वे अनेकों गुरुओं के द्वार खट्खटाते चले थे ।

ईश्वर की ओर से वेद विश्व की सबसे बड़ी उपलब्धि है । उसी वेद के उद्धार करने के लिए अपने जीवन भर के सुखकर माता-पिता के घर को उन्होंने त्यागा था । यदि वेदोद्धार करने के लिए वे न होते, तो रजवाड़े सुख को त्यागने वाले नालायक कुपुत्र कहलाते चौदह वर्ष की आयु में जो वेद के प्रति ज्योति उन में जगी थी वह भी असाधारण ही थी ।

उन्हें वेदोद्धार करने में सफल होना ही था। **वे पहले योग के पथ पर चले, फिर वेदों के सही ज्ञाताओं को ढूँढ़ कर उन के संग जाने लगे।** कठिन मार्गों को तय करने में परमात्मा ने ही उन्हें साहस दिया। उन का एक मात्र लक्ष्य था कि भारत देश को वेद-ज्ञान की ज्योति से आलोकित करना। वे उस कार्य में अकेले सफल हुए।

इस युग में दयानन्द जी ने ही वेद को ईश्वरीय-ज्ञान होने का प्रचार किया। वे बता सके कि मानव सृष्टि के आदि काल में ईश्वर ने मानव-सृष्टि के उद्धार के लिए ज्ञान का भण्डार वेद प्रदान किया था। इस सत्य के उजागर होने पर बहुत से लोगों की आँखें खुलीं । उनसे पहले इस सच्चाई को नहीं दिखाया था।

इस प्रकार के ला देने से वेद को गडेड़ियों के गीत कहने वालों के मुख में कालिख लग गई । निरुक्त के अनुसार अर्थ देकर उन्होंने वेदों को हर समय का सनातन ज्ञान होना दर्शा दिया। वेद-मन्त्रों को ऋषियों के द्वारा दिए जाने वाले अर्थों के श्रवण करने और अर्थ देखने से पहली बोल-चाल की भाषा बनी थी। उस से पहले मनुष्य के लिए कोई भाषा बोलने की नहीं थी। वेद मन्त्र ईश्वर की ध्वनियाँ हैं वे कभी भी मानव भाषा नहीं रहीं ।

उस वेद-ज्ञान को प्राप्त करने में स्वामी जी अपना सर्वस्व त्याग कर सके थे। वे वेद के लिए जीते थे और वेद के लिए ही मरे थे। जिन लोगों को वेद-ज्ञान के अनुकूल जीना और लोगों को जिलाना स्वीकार नहीं था उन्हीं लोगों की आँखों में उन का जीना खलने लगा था। पाँच हजार वर्षों के बीच में वे पहले महात्मा हुए जिन्होंने अपने भारत देश की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि वेद-ज्ञान के प्रति अपना जीवन अर्पण किया है।

उन्होंने प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द द्ण्डी नाम को अपनी परख की कसौटी बनाई थी। उन्हें वेद ज्ञान की वास्तविकता को परखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। दण्डी जी के आशीर्वाद से उन्होंने अपने को वेदोद्धारक और वेद-ज्ञान प्रचारक के योग्य बनाया था।

वास्तविक वेद के प्रचार में उन्होंने अनेक प्रकार के कष्ट उठाए। उन के मार्ग पर अनेकों ने रोड़े बिछाए उन्हें जीवन से हाथ धोने की समस्याओं का सामना करना पड़ा। सोलह बार मृत्यु के खतरे से अपने जीवन की रक्षा करनी पड़ी । वे हर बार मृत्यु के गाल में समाते समाते बचते रहे। पर सत्रहवीं वार में शत्रुओं के षडयन्त्र के विष से संसार ही छोड़ गए ।

कुछ लोगों ने उन्हें जितने गुरु उतने मत में सम्मिलित किया, तो कितनों ने मनमानी करने वाले उदण्ड होना करार दिया। थोड़े दूरदर्शी लोगों ने उन की सच्चाई को आंका पर उनमें बहुतेरे उनके अनुरूप नहीं बने। फिर भी वे सब वेद के कथनानुसार सुख से जीने को स्वीकार कर गए। आज वे लोग वेदानुकूल जी कर सुखी रहने के उदाहरण बने हैं। उन लोगों को अनुकरण करके बहुत से लोग आर्य बनना मान रहे हैं। आज सेसार में इने गिने लोग ही हैं, जो उन के दिखाए पथ पर चलना स्वीकारते हैं।

उन्होंने लोगों को शतायु होना सिखाया था । उनके जीवित काल में उन के विरोधी जानते थे कि वे बाल ब्रह्मचारी थे, वे लम्बी आयु जीकर उन लोगों द्वारा खड़े किये गए धर्म के नाम पर भ्रमों के महलों को अपने वेद-ज्ञान

के प्रचार से ढाह देंगे। उनके वेद प्रचार से राजे महाराजे लोग प्रभावित होने लगे थे ।

संसार में हर समय देश के सुधार को बहुत से बड़े-बड़े समझदार लोग भी पसन्द नहीं करते हैं। ऐसे लोग मुँह के आगे मुँह मरानी और पीठ के पीछे सत गंवानी की कहावत को सार्थक करने लगते हैं। ये लोग प्रायः गयवो हूँ और बछड़्वो हूँ का खेल खेलने लगते हैं। दयानन्द ऐसे लोगों के शिकार हुए। उन की लम्बी आयु को छोटी बनाने में उन के विरोधियों की ओर से कोई कसर छोड़ी नहीं जाने लगी।

यदि स्वीमी दयानन्द जी एक नया पन्थ चलाकर गदीधारी बन जाते तो वे एक स्थान पर बैठ जाते, शायद उन के शरीर के नाश करने वाले नहीं के बराबर होते । पर वे तो कमर कसे वेदों के ज्ञान से पूरे भारतीयों को जगाना चाहने लगे थे। **वे कुछ व्यक्तियों को नहीं, वे वेद से पूरे राष्ट्र को बदलने की धून ले चुके थे ।** वे राष्ट्र के अन्दर बहुतों के लिए खतरे बनने लगे थे।

एक बार ब्रह्मचारी का अकेले में इतने भयावह आन्दोलन को चलाना खतरों से भरे मार्ग को पार करना था। उनके प्रचार का प्रमुखाधार शास्त्रार्थ था। वेद-ज्ञान की सच्चाई के आगे किसी मत के सिद्धहस्त विद्वान ठहर नहीं पाते थे।

वेद के सत्य के आगे अन्य विद्वान फीके पड़ जाते थे। उन विद्वानों की स्वार्थपरता सामने आ जाती थी। इससे वे लज्जित होने लगे थे। ऐसे लोग अपने अन्दर सर्पिले स्वभाव रखने लगे थे। उन लोगों को यह डर भी था कि कहीं अंग्रेज सरकार धार्मिक सुधार में दयानन्द की बात को महत्व न दे देवे । तब तो लोगों का जासूस होने का दाग लगाने लगे थे।

कभी प्रजा के सुधार होने से कितने ही देश के बड़ों की दाल गलना मुश्किल हो जाता है। कभी किसी अर्थशास्त्री से बात कर रहा था। वह मुझे बोला कि सरकार का फर्ज बनता है कि देश में बड़ी संख्या में लोगों को गरीब बनाए रखे ये गरीब ही सभी कठिन और अपवित्र कार्यों को करके देश की अर्थ-व्यवस्था को ठीक गति में रखते हैं। कौन जाने इस अर्थ-नीति से जनता के मूर्ख और विद्वान होने का भी मेल हो। भारत की प्रजा में स्वतः आत्मा-निर्भरता उत्पन्न करने से पूर्व लम्बी आयु वाले दयानन्द को छोटी आयु के बनाने में नष्ट करने वाली बुद्धियाँ काम करने लगीं।

दयानन्द चाहते थे कि जैसे वेद के प्रादुर्भूत होने पर लोग ऋषियों के द्वारा मन्त्रों के किए अर्थों से आर्य प्रजा जीने लगी थी वैसे ही आज के लोग भी वैदिक बने। मनु महाराज ने वेदानुकूल मनुस्मृति नाम के मानव कानूनों को स्थापित किया था। उसी प्रकार से पुनः भारत में आर्यत्व पनपे। एक कहावत है दादी सब के लिए पुआ पकावे दादी से ही सब रूठ जावे। देव दयानन्द ने सब को जगाना चाहा उसी को कुछ लोग मिल कर सदा के लिए सुलाने का सहना सजाने लगे।

जगाने वाला तो तभी जगा पाता है, जब तक वह जगा रहता है। दयानन्द जैसे युग पुरुष की तरह राष्ट्र को तो कोई दूसरा नहीं जगा सकते। दयानन्द सिर्फ भारत ही को नहीं वरन सारे संसार को जगा पाने का दम रखते थे। उन्हें न किसी प्रकार का भय था। उन के हाथ में ऋषियों द्वारा वेद मन्त्रों के सही अर्थ करने का ज्ञान-विज्ञान हथियार स्वरूप लग गए थे। उस हथियार को पाने में उन्होंने अपने जीवन को तपाया था।

वे एक फकीर वेदज्ञ थे। रहने के लिए उनका अपना घर नहीं था और न सोने ही के लिए अपनी मिट्टी थी। वे आकाश रूपी ओढ़ने के तले धरती रूपी बिछौने पर वैदिक-ज्ञान के आनन्द में सो जाने वाले महान् आत्मा थे।

एक बात सत्य है कि उन्होंने न किसी को मारा, न किसी को दुख दिया और नाहीं किसी को हानि पहुँचाई। वे अपने वेद-ज्ञान से सबका उद्धार करते करते बेबूझ नादानों के हाथ जहर भी स्वीकार कर गए।

उनपर किसी विषैले सर्प फेंकने वाले को कभी कैद की सजा देने की जब बात आई, तब उस दयानन्द ने कहा था। मैं जगत में लगी बेड़ियों को खोलने आया हूँ मेरे कारण कोई जेल जा नहीं सकता।

जब उन्हें पता लगा कि उन के रसोईए से जहर देने की नादानी हो गई तो उसको कुछ पैसों की थैली देकर उन्होंने भगा दिया। वे किसी को भी कैद करने नहीं आए थे। वे तो सभी को दूसरों के बन्धन से मुक्ति दिलाने आए थे।

गृहस्थाश्रम

पंडित धर्मेन्द्र रिकाई, आर्य भूषण

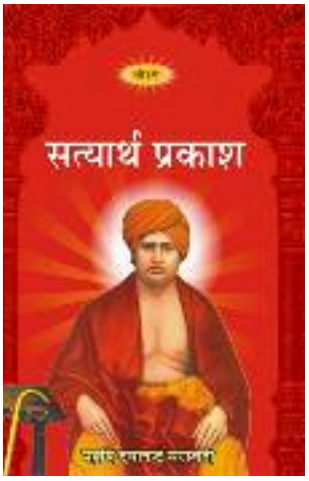

सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने गृहस्थाश्रम को सबसे बड़ा आश्रम माना है। मनुस्मृति में कहा है कि जैसे नदी और बड़े बड़े नद तब तक घूमते एवं भटकते ही रहते हैं जब तक वे समुद्र को प्राप्त नहीं होते, वैसे गृहस्थ ही के आश्रम से सब आश्रम स्थिर रहते हैं। जैसे वायु का आश्रय लेकर सब प्राणी जीवित रहते हैं वैसे गृहस्थ का आश्रय लेकर सब आश्रम रहते हैं।

संसार में गृहस्थ के बिना किसी का कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता । ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी तीनों आश्रमों को दान और अन्नादि देकर प्रतिदिन गृहस्थ ही धारण करता है। इसलिए गृहस्थ ज्येष्ठाश्रम है अथार्त् सब व्यवहारों में धुरन्धर कहलाता है।

सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास के अन्त में लिखते हैं जितना कुछ व्यवहार संसार में है, उसका आधार गृहस्थाश्रम है। यदि गृहस्थाश्रम न होता तो सन्तानोत्पति के न होने से ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम कहाँ से हो सकते? जो कोई गृहस्थाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है।

गृहस्थ को स्वर्ग बनाने के लिए स्त्री पुरुषों का पुनर्विवाह भी आवश्यक है क्योंकि इसकेबिना समाज में भ्रूण हत्या, व्यविचार एवं कुकर्म होते हैं। जब तक मृतक स्त्री पुरुष युवावस्था में हैं उनके मन में सन्तानोप्पति तथा विषय की चाह बनी रहेगी।

प्रश्न पैदा होता है कि विवाह और गृहस्थ के बन्धन में मनुष्य को बहुत दुःख भोगना पड़ता है इसलिए क्यों न जब तक प्रीति है तब तक इकट्ठे रहें, जब प्रीति प्रेम छूट जायें तो एक दूसरे को छोड़ दें ? परन्तु इस प्रकार का स्वच्छन्द प्रेम पशु पक्षियों का व्यवहार है। इससे संसार के अच्छे व्यवहार नष्ट हो जायेंगे, कोई किसी की सेवा नहीं करेगा, समाप में महाव्यभिचार फैल जायेगा तथा सब रोगी एवं निर्बल होकर छोटी आयु में ही नष्ट हो जायेंगे।

सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि यह पशु पक्षियों का व्यवहार है, मनुष्य का नहीं। यदि मनुष्यों में विवाह का नियम न रहे तो गृहस्थाश्रम के अच्छे अच्छे व्यवहार सब नष्ट भ्रष्ट हो जायें और कोई किसी की सेवा न करे और महाव्यविचार बढ़कर सब रोगी निर्बल और कुलों के कुल नष्ट हो जायें। इसी उन्मुक्त प्रेम, स्वच्छन्द यौनाचार के कारण विश्व में एड् स जैसी भयंकर बीमारियाँ फैल रही हैं।

विवाह के बाद गृहस्थ में संतान का बड़ा महत्व है। कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम (७/१७) में लिखा है कि वे गृहस्थ लोग धन्य हैं जो कली के समान कुछ कुछ खिले हुए दाँतों वाले, अकारण हँसने वाले बालकों को अपनी गोद में उठाकर उनके शरीर की धूली से मलिन होते हैं।

जिस घर में बालक नहीं, सन्तान नहीं उसकी व्यथा वेही जान सकते हैं परन्तु परिवार में घर में बहुत सन्तान भी अच्छी नहीं क्योंकि वह दुःख का कारण होती है - उनका पालन पोषण शिक्षा दीक्षा कठिन हो जाती है तथा माता पिता एवं सन्तान के स्वास्थ्य की दृष्टि से भी वह हितकर नहीं है। इसीलिए आजकल कम सन्तान और सुखी परिवार की ओर बल दिया जाता है।

गृहस्थ एवं परिवार का आधार नारी है। नारी ही मनुष्य को जन्म देती है। माँ के रूप में नारी सन्तान की सबसे शिक्षक है। शतपथ ब्राह्मण में माता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद। स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करता। इसलिए धन्य वह माता है जो कि त्रर्यधान से लेकर जब तर पूरी विद्या न हो तबतक सुशीलता का उपदेश करे। आज नारी गृहस्थ ही नहीं, समाज शासन तथा जीवन से हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है। गृहस्थ व परिवार का तो वह मूलाधार है। इसलिए मनु ने कहा था कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ उनकी पूजा, आदर साकार नहीं होता वहाँ सब क्रियाएँ निष्कल हो जाती हैं। इसलिए पिता, भाई, पति, देवर आदि द्वारा तथा बहुत कल्याण एवं सुख चाहने वाले लोगों द्वारा नारी का सम्मान करना चाहीए।वेद में नारी को ब्रह्मा कहा गया है, *स्त्री ही ब्रह्म बभूविथ* (ऋ० ९/३३/६)। सन्तान के निर्माण से परिवार को स्वर्ग बनाने में उसकी मुख्य भूमिका है। वेद आगे रहता है नारी ही सम्राजी है। घर भी सम्राजी वह तभी बन सकती है जब वह वेद के अनुसार पति, सास, ससुर आदि भी सेवा करे तथा घर के अन्य लोग के साथ स्नेहयुक्त व्यवहार करे।

महर्षि दयानन्द की कालजयी कृति
सत्यार्थ प्रकाश का संदेश

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, वेद प्रवक्ता, सम्पादक-अध्यात्म पथ
संपर्क - फ्लैट नं० सी - १, पूर्ति अपार्टमेंट (एफ० ब्लॉक) विकासपुरी, नई दिल्ली - १८

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ लिखकर वैचारिक क्रान्ति की और भ्रान्तियों का निवारण किया। शास्त्र के तूणीर से उन्होंने तर्क का तीर निकाला, ये उनका शस्त्र था जिसने युगों से भारत के क्षितिज को आच्छादित करने वाले अज्ञानरूपी भस्मासुर का वध किया। दयानन्द व्यक्ति नहीं, अग्निपुंज था, जिधर जाता दिशाएँ आलोकित हो उठती थीं, जहाँ गिरता कुरीतियों पर गाज बनकर और पीड़ितों के लिए दया का भाव लेकर, आनन्द का अमृत उन्हें देने वाला दयानन्द उनसे मिलता प्रसन्नता और उल्लास का नया साज बनकर ।

दयानन्द के शब्द शास्त्र में भय और प्रलोभन का स्थान नहीं, भय उन्हें आतंकित नहीं कर सका और प्रलोभन उसे खरीद नहीं सका ।

दयानन्द की विद्याग्रहण की क्षमता कितनी विलक्षण थी, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि अपने महानगुरु के चरणों में मात्र ३ वर्ष बैठकर उन्होंने इतना कुछ प्राप्त किया जिसको ग्रन्थरूप में मात्र साढ़े तीन महीने में उन्होंने संजोकर रख दिया, उस ग्रन्थ का नाम सत्यार्थ प्रकाश है। इसकी महत्ता तब समझ में आ सकती है जब हम यह भी ध्यान में रखें दयानन्द अन्य कल्याणकारी गतिविधियों में भी व्यस्त थे। साढ़े तीन महीने में लिखे गये ग्रन्थ में वह हमें पढ़ने को मिलता है जिसने तीन शताब्दियों का इतिहास बदल कर रख दिया ।

यह कार्य केवल दयानन्द जैसा आदित्य ब्रह्मचारी ही कर सकता था। सत्यार्थ प्रकाश में ३७७ ग्रन्थों का उल्लेख है, तथा १५४२ वेद मन्त्रों एवं श्लोकों के उद्धरण हैं। चारों वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, षडदर्शन, १८ स्मृति सूत्रग्रन्थ, जैन-बौद्ध ग्रन्थ, बाइबिल, कुरान इन सबके उद्धरण ही नहीं उनकी सन्दर्भ सूची भी दी गयी है। किस ग्रन्थ में कौन सा मंत्र या श्लोक है, वाक्य कहाँ है, उसकी संख्या क्या है यह सब कुछ इस साढ़े तीन महीनों में लिखे ग्रन्थ में मिलता है।

आज स्थिति ये है कि एक अनुसन्धानकर्त्ता जिसे सभी संदर्भ ग्रन्थ उपलब्ध हों और अनुकूल सामग्री की सुविधा भी प्राप्त हो तो उस अनुसन्धानकर्त्ता को भी ऐसा ग्रन्थ लिखने में वर्षों लगेंगे। और तब भी यह सुनिश्चित नहीं किया जा सकता, कि विषय का प्रतिपादन इतना निर्भ्रान्त और शंकाओं का समाधान ऐसा होगा कि संदेह को कोई प्रश्रय न हो।

कार्लमार्क्स ने ३४ वर्ष इंगलैण्ड में बैठकर डास कैपिटल ग्रन्थ लिखा था जिसने विश्व में नवीन आर्थिक दृष्टिकोण को जन्म दिया किन्तु महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' साढ़े तीन महीनों में लिखा था, जिसने नवीन सामाजिक दृष्टिकोण को जन्म दिया।

ऋषि दयानन्द ने सर्वाधिक सशक्त विचार जो सत्यार्थ प्रकाश में दिया वो वर्ण व्यवस्था को कर्म के आधार पर प्रतिष्ठित करना। दयानन्द वास्तव में जो पतित और दलित थे उनकी उन्नति एवं उनका उद्धार चाहते थे।

आज के स्वार्थ परायण राजनीतिज्ञों की भाँति वह उन्हें सदा दलित रखकर उनका शोषण नहीं करते थे। वे चाहते थे कि दलित रहते हुए एक अधिकार माँगने वालों एक वर्ग खड़ा होकर हमारे गले न पड़ा रहे। दयानन्द की आँखें वह दिन देखने को तरसती थीं जब उनके युग का दलित उन्नति कर हमारे समकक्ष खड़ा हो, गिड़गिड़ाते हुए हमारे पाँव में न पड़े, वरन् हर्ष से गद्गद हो हमारे गले मिले।

महर्षि दयानन्द की कालजयी कृति सत्यार्थ प्रकाश ने अनेक लोगों को जीवन दिया, दृष्टिहीनों को दृष्टि दी। और जीवन में पतझड़ का अनुभव करने वाले गरमी में झुलसते हुए लोगों को वासन्ती मधुरिमा की, भरपूर वृष्टि दी।

ग्रन्थ रचना का उद्देश्य

स्वयं ऋषि के शब्दों में – "मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।"

"मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़कर असत्य में झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी गई और न किसी का मन दुखाना और न किसी की हानि का तात्पर्य है किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति व उपकार हो ..... क्योंकि सत्योपदेश के बिना

अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं ।" सत्यार्थ प्रकाश दो भागों में विभक्त है, एक है पूर्वार्द्ध और एक उत्तरार्द्ध, पूर्वार्द्ध में दस और उत्तरार्द्ध में चार समुल्लास हैं । इस प्रकार सत्यार्थप्रकाश में चौदह समुल्लास हैं।

समुल्लास शब्द का प्रयोग एक महान् प्रयोग है

समुल्लास शब्द का प्रयोग एक महान् प्रयोग है जो दयानन्द की सर्वथा मौलिक विचारणा का द्योतक है । यदि कोई जुलाहा विद्वान् बन जाये और पुस्तक लिखे तो वह जितना कुछ जान लेगा उसी में समझ लेगा कि पट खुल गए हैं और उसी पर वह डटकर रहेगा, हटकर आगे नहीं बढ़ेगा ।

कुम्हार यदि विद्वान् बन जाए तो वह अपने ग्रन्थ का प्रारम्भ प्रथमो घटः आदि शब्दों का प्रयोग करेगा ।

लेकिन यश अपयश, मान-हानि के प्रति सर्वथा समभाव रखने वाला, समरस दयानन्द स्वयं उल्लासित रहते हुए लोगों को उल्लास देना चाहता है और वह अपने इस महान् ग्रन्थ का वर्गीकरण समुल्लास शीर्षक से करता है। ताकि दुनिया को लोग अच्छी तरह उल्लसित और प्रफुल्लित जीवन जीने वाले बने।

वैचारिक क्रान्ति का मूल स्रोत सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन ऋषि ने मुरादाबाद निवासी राजा जयकृष्णदास की सत्प्रेरणा पर किया। **सत्यार्थ प्रकाश** के १४ समुल्लासों के विषय इस प्रकार है :

प्रथम समुल्लास में ईश्वर के कुछ नामों व्युत्पत्तिपूर्वक गिनाये गये हैं।
द्वितीय समुल्लास में शिक्षा की अनिवार्यता एवं उसके स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है ।
तृतीय समुल्लास में ब्रह्मचर्य, पठन-पाठन की व्यवस्था और सत्यासत्य के निर्णय के लिए ग्रन्थों की प्रामाणिकता एवं अप्रमाणिकता पर विशद विवेचन किया गया है ।
चतुर्थ समुल्लास में ऋषि ने विवाह और गृहस्थाश्रम पर विशद प्रकाश डाला है ।
पंचम समुल्लास में उन्होंने वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की विधि पर प्रकाश डाला है ।
षष्ठ समुल्लास में आर्य शास्त्रों के आधार पर राजधर्म का वर्णन किया है।
सप्तम समुल्लास में वेदप्रतिपादित ईश्वर और वेद विषय का भी विस्तारपूर्वक वर्णन किया है ।
आठवें समुल्लास में जगत् की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय का उल्लेख किया गया है ।
नवें समुल्लास में विद्या-अविद्या, बन्धन और मोक्ष की मौलिक व्याख्या की है ।
दसवें समुल्लास में आचार-अनाचार, भक्ष्य के अभक्ष्य के विषय पर उन्होंने वैदिक मान्यताएँ दी।
११, १२, १३, १४ समुल्लास में क्रमशः देश में प्रचलित मतमतान्तर, चारवाक बौद्ध और जैन, ईसाई और इस्लाम मत की समालोचना की है ।

महर्षि का अनिवार्यवाद

१. आठ वर्ष के हों तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला में भेज देवें । *स० प्र० ३-६६,४*
२. इसमें राजनियम और जाति नियम होना चाहिये कि पाँचवे अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई भी अपने लड़के-लड़कियों को घर में न रख सकें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे वह दण्डनीय हो। - *स०प्र०३ - ६७,११*
३. राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का व लड़की किसी के घर में न रहने पावें किन्तु आचार्य कुल में रहें। जब तक समावर्तन का समय न आवे, तब तक विवाह न होने पावें । *स० प्र० ३-१२९,३*
४. राजा को योग्य है कि सब कन्याओं और लड़कों को उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रख के विद्वान् कराना। जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उसके माता-पिता को दण्ड देना। *स० प्र० ३-१२९,४*
५. उनके माता-पिता अपनी सन्तानों से व सन्तान अपने माता-पिताओं से न मिल सकें और न किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार एक दूसरे से कर सकें, जिससे संसारी चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिन्ता रखें। *स० प्र० ३-६७,३*
६. सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान आसन दिये जायें चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हों, चाहे दरिद्र के सन्तान हों, सबको तपस्वी होना चाहिए । *स० प्र० ६७,१*
७. जैसे पुरुषों को व्याकरण धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़नी चाहिए वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित शिल्पविद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए । *स० प्र० ३-१२८,६*
८. जब गृहस्थ शिर के श्वेतकेश और त्वचा ढीली हो जाय और लड़के के लड़का भी हो गया है, तब वन में जाके बसे । *स० प्र० ५-२०१,४*

९. वानप्रस्थ-स्वाध्याय अर्थात् पढ़ने-पढ़ाने में नित्ययुक्त, जितात्मा, सबका मित्र, इन्द्रियों का दमनशील, विद्यादि का दान देने हारा और सब पर दयालु, किसी से कुछ भी पदार्थ न लेवे, इस प्रकार सदा वर्तमान करे । *स० प्र० ५-२०१,१९*

१०. (क) इसलिये श्रद्धा पूर्वक ब्रह्मचर्य और गृहस्थ आश्रम का अनुष्ठान करके वानप्रस्थाश्रम अवश्य करना चाहिए। *स० वि० २६९-१३*

(ख) वहाँ जंगल में वेदादि शास्त्रों के पढ़ने-पढ़ाने में नित्ययुक्त । *सं० वि० २७२-६*

(ग) जो जंगल में पढ़ाने और योगाभ्यास करने हारे तपस्वी धर्मात्मा विद्वान् लोग रहते हैं। *सं० वि०२७-४*

११. यह गुण कर्मों से वर्णों की वयवस्था कन्याओं की सोलहवें वर्ष और पुरुषों की पच्चीसवें वर्ष की परीक्षा में नियत करनी चाहिये । *स० प्र० ३४७,२*

१२. वेद पढ़ने-पढ़ाने सन्ध्योपासनादि पञ्चमहायज्ञों के करने और होम मन्त्रों में अनध्याय विषयक अनुरोध-आग्रह नहीं है, क्योंकि नित्यकर्मों में अनध्याय नहीं होता, जैसे श्वास प्रश्वास सदा लिये जाते हैं, बन्ध नहीं किये जाते वैसे नित्यकर्म प्रतिदिन करना चाहिये न किसी दिन छोड़ना । *स० प्र० ३ -८५,१६*

१३. जो सब वर्णों में पूर्ण विद्वान् धार्मिक परोपकार प्रिय मनुष्य है उसी का ब्राह्मण नाम है... इसीलिए लोक श्रुति है कि ब्राह्मण को ही सन्यासी का अधिकार है अन्य को नहीं । *स० प्र० ५-२११,१८*

१४. यदि एक अकेला सब वेदों का जानने हारा द्विजों में उत्तम संन्यासी जिस धर्म की व्यवस्था करे वही श्रेष्ठ धर्म है क्योंकि अज्ञानियों सहस्रों,लाखों, करोड़ों, मिलके जो कुछ व्यवस्था करें उसको कभी न मानना चाहिए। स० प्र० ६-२२८,१

१५. जो ब्रह्मचर्य सत्य भाषणादि व्रत वेद विद्या वा विचार से रहित जन्म मात्र से शूद्रवत् वर्त्तमान है उन सहस्रों मनुष्यों के मिलने से भी सभा नहीं कहाती । *स० प्र० ६ - २२८,१*

महापुरुषों की दृष्टि में सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश ने न जाने कितने असंख्य व्यक्तियों की काया पलट की होगी । - **स्वामी श्रद्धानन्द**

यदि सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति मूल्य एक हज़ार रूपया होता तो भी उसे सारी सम्पत्ति बेचकर खरीदता ।

- गुरुदत्त विद्यार्थी एम०ए०

मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। इससे तख्या पलट गया । सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन ने मेरे जीवन के इतिहास में एक नवीन पृष्ठ जोड़ दिया। - ***रामप्रसाद बिस्मिल***

युग निर्माता तथा चतुर्मुखी प्रगति की भावना से प्रणीत यह दिव्य ग्रन्थ। (सत्यार्थप्रकाश) एक महान् प्रकाश स्तम्भ है, जिसका निर्माण महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम सम्पूर्ण मानव समाज की उन्नति के लिये किया।- ***डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी***

सत्यार्थ प्रकाश के महत्व को कम करने का अर्थ है, वेदों के बहुमूल्य सार की प्रतिष्ठा व मूल्यों को कम किया जाना।

-सी०एस० रंगास्वामी अय्यर

सत्यार्थ प्रकाश वेदों का द्वार है और आर्यसमाज का जीवन है । - ***इन्द्र विद्या वाचस्पति***

हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला ग्रन्थ अमर रहे, यही कामना है सत्यार्थ प्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता। - ***विनायक दामोदर सावरकार***

सत्यार्थ प्रकाश स्वामी दयानन्द की मार्कतुल आला तफनीस (सर्वोत्तम कृति) है और स्वामी दयानन्द आर्यों के गुरु हैं। - ***मौलाना मुहम्मद अली***

दुनियां सारी घूम ली, कहीं पाया नहीं प्रकाश ।
दूर अंधेरा हुआ जब, पढ़ा सत्यार्थ प्रकाश ।।

सच तो यह है वेद का है सार 'सत्यार्थ प्रकाश'
ज्ञान और विद्या का है भण्डार 'सत्यार्थ प्रकाश'
कर रहा है सत्य का विस्तार 'सत्यार्थ प्रकाश'
रोकता है झूठ का प्रचार 'सत्यार्थ प्रकाश'

चतुर्थ समुल्लास - विवाह सम्बन्धी विषय

श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, एम.एस.के., विद्या वाचस्पति

वे चार व्यक्ति जिनके हाथों में प्रथम बार मॉरीशस में सत्यार्थ प्रकाश पड़ा, वे है श्री भिखारी जी, श्री खेमलाल जी, श्री जगमोहन गोपाल जी और श्री दलजीतलाल जी ।

सत्यार्थ प्रकाश के बारे में लिखते हुए उन महा पुरुषों के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित कर रही हूँ ।

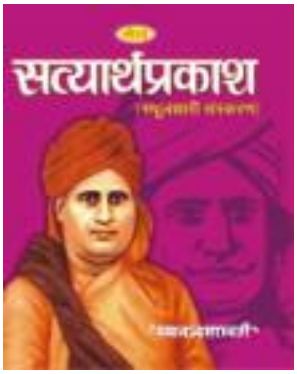

आभार प्रकट

चतुर्थ समुल्लास में समावर्तन, विवाह संस्कार और गृहस्थ आश्रम की चर्चा की गई है। मनु के श्लोकों के आधार पर ब्रह्मचर्य पूर्वक वेदों का अध्ययन कर समावर्तन संस्कार करा के ही व्यक्ति को गृहस्थ आश्रम के लिए योग्य बनना बतलाया गया है। विवाह के लिए योग्य कन्या के बारे में कहा गया है कि ऐसी कन्या को योग्य कहा गया है जो माता की ६ः पीढियों में और पिता के गोत्र की न हो क्योंकि परोक्ष वस्तु की प्रशंसा सुनकर प्राप्ति की उत्कट इच्छा और प्राप्ति में प्रसन्नता होती है। यहीं पर दूर देश मे विवाह करने के आठ लाभ भी गिनाये गये हैं। मनु के द्वारा निर्दिष्ट विवाह सम्बंध के अयोग्य कुलों का भी वर्णन है। स्वामी जी के विचार से विवाह योग्य आयु चौबीस, बत्तीस और अड़तालीस वर्ष का पुरुष है तथा सोलह, बीस और चौबीस स्त्री के लिए है। बाल-विवाह की हानियाँ बतलाते है। गोरी रोहिणी आदि संज्ञाओं का खण्डन किया गया है वहीं पर तत-सदृय श्लोक बनाकर उन पुरातन मान्यताओं का खण्डन किया गया है तथा शास्त्रीय वचनों को उद्धृत कर के पच्चीस और सोलह की आयु का समर्थन किया है। स्वामी जी के विचार से समान गुण, कर्म, स्वभाव वालों का ही विवाह होना चाहिए, असमान गुण, कर्म, स्वभाव वालों से नहीं चाहे सारी आयु अविवाहित ही क्यों न रहना पड़े। विवाह में लड़के-लड़कियों की इच्छा के विरूद्ध न हो। इसी लिए स्वामी जी युवावस्था में विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, कुल, शरीर के यथायोग्य स्वयं विवाह को सर्वोत्तम और वेद संगत मानते हैं। उनके विचार से आर्यावर्त के पतन का कारण स्वयंवर विवाह का छूट जाना ही है। यहाँ पर वर्ण व्यवस्था का विचार भी किया गया है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ शूद्रोऽअजायत ।। *यजु० ३१/११*

इस मंत्र से जन्मना व्याप्त वर्ण व्यवस्था का खण्डन कर गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था को स्वीकृति प्रदान की गई है। वर्ण विनिश्चय के लिए विद्याध्ययन के बाद विवाह से पूर्व-वर्ण प्रदान किया जाना चाहिए। यहाँ पर चारों वर्णों के गुण, कर्म, स्वभाव का विवेचन किया गया है। इसके बाद विवाह मनु-निर्दिष्ट आठ प्रकार गिनाए गये हैं। इस परस्पर बात चीत से एक दूसरे की सहायता लेने का उल्लेख है। परस्पर बातचीत से एक दूसरे की योग्यता से लड़के-लड़कियों को सन्तुष्ट होना चाहिए । यहाँ पर गर्भ समय से लेकर पात-कर्म तक के समय में किए जाने स्वस्थ वृत्त और सदवत्त की चर्चा, गृहस्थाश्रम में संयम, प्रसन्नता, आदि बातें हैं। दैनिक पंच महायज्ञों के लिए विधान, स्वाध्याय नित्य करने की, गृहस्थियों के द्वारा दान की चर्चा में दान अपात्र पाखंडी लोगों को नहीं देना चाहिए। गृहस्थ आश्रम में अथर्ववेद का मंत्र कहता है – **जाया पत्ये मधुमतीं कचं वदतु शानतिवाम्** । *(अथर्व ३-३०-२)* – पत्नी और पति आपस में मधुरभाषी तथा सुखदायी हों ।

SATYĀRTHA PRAKĀSH MONTH

Sookraj Bissessur, B.A., Hons.

Re-establishing Spiritual Principles and Denouncing Blind Faith

'The means of salvation are the worship of God, in other words, the practice of Yoga, the performance of righteous deeds, the acquisition of true knowledge by the practice of Brahmacharya, purity of thought, a life of activity and so on.'

Satyārtha Prakāsh

With the advent of many religious factions numerous rites emerged. Blind faith and hypocrisy widely infested human society. Prayers to appease stars, planets, etc. took priority over the true worship of God. Occult practices and witchcraft became the order of the day.

Swami Dayanand wrote the Satyārtha Prakāsh (The meaning of the Light of Truth) in 1874 – A.D. to eradicate blind faith, false beliefs and misconceptions, and to restore 'Dharma' (the Vedic way of life.)

Swami ji wrote the book at the suggestion of his friends and on the insistence of Raja Jaikissandas. The work started on 12th June, 1874 at Varanasi (Banaras). It was completed within three months at Allahabad.

In its preface Rishi Dayanand writes : *"My chief aim in writing this book is to unfold truth. I have expounded truth as truth and falsehood as falsehood. The exposition of falsehood in place of truth and truth in place of falsehood does not constitute the unfolding of truth."*

The 'Masterpiece' of Dayanand changed the thinking process of Indians and the world at large. It promoted truth, logic and precision. It invigorated in them spiritual strength, energy and implicit faith which empowered them to counter act the onslaught by the foreign rulers of India. Their re-awakening during this dark period of history are due to a huge extent to the teachings of Satyārtha Prakāsh. Many who did not agree with Swami Dayanand's views, nevertheless appreciated his substantial and decisive contribution.

The Satyārtha Prakāsh promotes Dharma, the principles of right conduct. It rejects blind faith and religious misconceptions. Swami ji judiciously analyses various beliefs to enlighten the masses. This forceful approach was the dire need at a time when the awakening of the Indian society from its deep slumber was a matter of urgency, the teachings are evergreen.

Swami Dayanand's genuine motive was to spell out truth and nothing but the truth, hence the Satyārtha Prakāsh is an eye opener for all. Swamiji explains his view point in the following words : *"The main object of my writing this book is to elucidate true principles, i.e. to declare as untruth, what is untrue. Truth is in speaking, writing and believing in connection with a thing as it actually is. Only a bigot will express the demerits of his own faith as merits, and the merits of other faiths as demerits."*

It is the duty of all to learn and promote the real nature of truth and untruth. There is no other way to improve humanity. The Satyārtha Prakāsh provides the reader with good insight, leads him towards truth and spirituality. It also inspires absolute confidence to always follow the path of righteousness devotion, loyalty, generosity, humility, etc.

Sharing knowledge is a noble act. The Satyārtha Prakāsh month is time to spread the awareness handed over by Maharishi Dayanand Saraswati.

THE PRACTICAL APPLICATIONS OF YOGA IN DAY-TO-DAY-LIFE

Address at the Auditorium, IGCIC Complex, Phoenix on 21 June 2016 on the occasion of the International Yoga Day hosted by the Indira Gandhi Centre for Indian Culture, the Indian High Commission, the Ministry of Health and Quality of Life & the Mahatma Gandhi Institute in association with Arya Sabha Mauritius & the Art of Living Foundation, Mauritius.

The origin of the word Yoga

Yoga (pronounced as Yog) is a field of knowledge originating from the Vedas. The word Yoga is a derivative from the Sanskrit word Yuja, i.e. to join, unite, connect and link-up.

The purpose of the Yog Darshan

Besides the spiritual aspect and objectives, the aphorisms (*sutras*) indicates that the practical applications in our day-to-day life also leads to 100% success in what we may be doing, be it studies, sports, any type of work be it for pay or any other form of reward, selfless service (*nishkāma sevā*) …etc.

Definition of Yoga

The second aphorism of the Yoga Darshanam compiled by Sage Patanjali states: *Yogashchittavritti nirodhah (Y.D. 1.02)*. Yoga is the (*nirodhah*) silencing of (*chitta* vritti) the waves of mental and emotional activities.

Yoga is beyond the bundle of exercises (*āsana – vyāyāma*) to remain fit physically as we commonly believe. These are needed to keep the body fit to be able to delve into the ashtānga yoga as elucidated by Maharishi Patanjali in his treatise, the Yoga Darshanam which contains 196 sutras or aphorisms.

Ashtānga yoga is the eight-fold process of Yoga constituting of (i) *Yama* - social discipline, (ii) *Niyama* - personal discipline, (iii) *āsana* - posture, (iv) *prānāyāma* - control over breathing process, (v) *pratyāhāra* - introversion of senses, (vi) *dhārana* -focus, Dhyāna - meditation, *Samādhi* – self & God-reaisation

The soul and the body: two distinct entities

The soul is the traveller who orders the driver as to the destination to be reached. The physical body is the chariot. The intellect as the driver decides the direction in line with the order from the traveller. The intellect commands the mind which represents the reins that connect the driver and the horses, i.e. the five sense organs of perception and five organs of actions.

Only a correct order by the traveller will lead to the appropriate destination. The body, the intellect, the mind, the sense organs are all inert and activated only by the soul.

The silencing of the unrest of mental and emotional activities empowers us

- ➢ *To be less disturbed by untimely, superfluous thoughts.*
- ➢ *To fine-tune our observation faculty and our focus on the subject matter of our pursuit - study, work, play …etc.*
- ➢ *To have better self-control, self-understanding, creativity, compassion, peace of mind.*
- ➢ *To live in the present with amplified positivity.*
- ➢ *To experience fulfilment, enlightenment and peace beyond all understanding and expression, which can neither be bought nor possessed - the bliss of being one with nature or the Divine*

Consequences of mental and emotional activities

Mental and emotional activities yield grief and happiness. Those heading to truth, virtue, true knowledge, total commitment in the world yet remain uncoloured by the world (disinterest in things that cause undue attachment), benevolence, self and God-realisation yield happiness. Turned towards untruth, vice / immorality, ignorance, selfishness / greed, extravagance / immoderation, they yield misery.

The goals of human life

Human beings are on the constant look out for happiness and ward off misery. Yoga Darshan spells out: *Heya-hetu; hāna-hāna upāya*. We should know the causes of suffering to be able to ward off suffering. The universal values spelt out in the first two steps of Yoga, namely - Yama and Niyama shall then top up our lives with happiness, in the same way as light dispels darkness.

Price: the continual devotion of the aspirant

Sa tu dirghakālanairantaryasatkārasevito dridhabhumi (Y.D. 1.14) Such practice (*sa tu*) needs to be over a long time (*dirgha kāla*), constant / regular (*nairantarya*), and total commitment, passion, devotion (*satkār asevitah*).

Success in any field, be it the upbringing of children, sports, studies, research, discoveries and inventions, meditation for self-realisation and God-realisation, etc. are achieved only on the above terms and conditions. These are no new theories; they originate from the Vedas and subsequently encoded by sages.

Barriers to Yoga

The following are hurdles in the path of the aspirant who strives to silence the fluctuating mental and emotional activities: (a) Physical imbalance, sickness … (*Vyādhi*); (b) Playing truant in our practice (*Styāna*); (c) Doubts (*Sanshaya*); (d) irresponsible, unconcerned attitude (*Pramāda*); (e) Little or no consideration to put up our utmost efforts to realise our goals (*Ālasya*); (f) Extravagance, overindulgence in the subject matter of our senses (*Avirati*) –; (g) contrary knowledge (*Bhrāntidarshan*); (h) Failure (*Alabdhabhumikatwa*); (i) Letting go or absence of any effort to consolidate realisations (*Anavasthitatwa*). (YD 1.30)

Afflictions arise out of (i) ignorance, confusion (*avidyā*); (ii) ego, delusion (*asmitā*); (iii) attachment to/ craving for that which gives pleasure (*raga*); (iv) hatred for that which gives pain (*dvesha*); and (v) fear of discontinuity or death (*abhinivesha*). (YD 2.3)

The following are causes that disturbs tranquillity and focus: (a) Grief (*Dukha*) (b) post-failure irritation (*Dauramanasya*); (c) shaking of limbs (*Angamejayatwa*); (d) Irregular breathe in and breathe out process (*Shwāsa prashwāsa*). (Y.D. 1.31)

Codes of behaviour

The four behavioural patterns are (1) Friendship (*maitree*); (2) Compassion / empathy (*karunā*); (3) Contentment (*muditā*); and (4) Indifference (*upekshā*) to be exercised respectively towards those who are (1) happy, (2) suffering and in need, (3) those who are ethical in thoughts, speech and actions, and (4) cruel and hinder physical, moral / spiritual and social progress. (YD 1.33)

We need to keep the keys of our inner peace and happiness with us and <u>not</u> hand them to others … *Apne mana ki shānti ke chābi apne sāth rakhein, dusron ke hāth mein nahin denā!!* The above four behavioural patterns empowers us to be happy at all times and undisturbed by whatever or however the person in front of us may act and / or react towards us.

Handing the keys of your happiness to others equals to a loss of control ...and either a crash or brutal landing into the gutters. It is best to keep the keys of your quietude with you.

Music Day

Music Day, celebrated today June 21, is also time to delve into the sounds of silence. We live in an era of noise where noise is the signage of the world. To break with that noise we go on retreat where silence hums …**but at what cost**?

Yoga brings us back to harmony. The silence vibrates in the pure field of consciousness …beyond ego …beyond the physical / physiological silence ...***and at no cost***.

Silence : the womb for creativity

That silence creates a conducive environment for the true self to emerge. It is the womb from which creativity is born …be it the masterpiece of Beethoven, Mozart, Ravi Shankar and recently Resul Pookutty, the sound-mixer in Slumdog Millionaire.

Resul forcefully emphasized on the value of those moments of silence which empowered him to create that music …and eventually bag an award, the first Indian in the 80+ years of the International Oscar.

The deaf and the dumb best communicates in silence. Silence is sunshine …rapture …golden whereas company is clouds …doubts …brass. The idle mind is the devil-at-work …the silent mind is the angel-at-work.

Let us value the moments of silence which Yoga gives us at no cost ...save some time for the practice. Results are almost immediate. On the occasion of the International Day of Music and Yoga, I wish you all … lots of happy moments of silence.

***Yogi* Bramdeo Mokoonlall, Darshanācharya**
(Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya)
Arya Sabha Mauritius

गतांक से आगे

आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ : उद्‌भव, विकास एवं उनका सिंहावलोकन

श्रीमती शान्ति मोहाबीर,एम.ए.

आर्य पत्रिका : १९२४

'मोरिशस आर्य पत्रिका' का पुर्नप्रकाशन साप्ताहिक रूप में १७ अगस्त १९२४ को आर्यसमाज द्वारा प्रारंभ हुआ। राष्ट्रीय पुस्तकालय पोर्ट लुई में १८ नवम्बर १९२४ को प्रकाशित 'मोरिशस आर्य पत्रिका' के पंचम अंक उपस्थित है । प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ अंक अनुपलब्ध हैं । उपलब्ध प्रतियों से पता चलता है कि यह पत्र प्रति शुक्रवार को हिन्दी, फ्रेंच और अंग्रेज़ी में छपता था। इस पत्र के संपादक पंडित काशीनाथ किष्टो थे। यजुर्वेद का मंत्र **'मित्रस्याहं चक्षुषा, सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'** मोरिशस आर्य पत्रिका का आदर्श वाक्य था। इस पत्र का मुद्रण एवं प्रकाशन 'मोडर्न प्रिंटिंग एस्टाब्लिस्मेंट' २१ बूर्बों स्ट्रीट, पोर्ट लुई में होता था।

स्वर्गीय मोहनलाल मोहित जी ने (१९९२, पृ० २४६) बताया है कि "तमिल भाषी आर्य श्री मुच्यें ने तमिल कवि पंडित परमाल सुब्रायन को भारत भेजकर प्रेस मंगवाया था। सज-धज के साथ पत्र निकलने लगा था। हिन्दी प्रचार करने में पंडित काशीनाथ को दो तमिल भाषियों का सहयोग प्राप्त हुआ था।"

श्री प्रहलाद रामशरण 'इन्द्रधनुष' के संपादकीय में 'मोरिशस आर्य पत्रिका' के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए लिखते हैं कि *"एक उत्तम पत्रकार होने के नाते पंडित काशीनाथ ने एक आर्यसामाजिक पत्र की आवश्यकता का अनुभव किया । पहले, अपने निंदकों को उत्तर देने और दूसरे, स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रस्थापित वैदिक सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार करने हेतु ।"* (इन्द्रधनुष, २००३, पृ० ४)

शुक्रवार १७ सितंबर १९२६ द्वितीय वर्ष, संख्या ११ से 'मोरिशस आर्य पत्रिका' का संपादन कार्य श्री मुसांसिंह करने लगे । श्री मुंसासिंह इस पत्र के मालिक भी थे। तब से इस पत्र का मुद्रण एवं प्रकाशन 'द वैदिक प्रेस' दयानंद धर्मशाला, १६ फ्रेर फ़ेलिक्स दे वाल्वा स्ट्रीट, पोर्टलुई से होने लगा । कुछ दशक पूर्व से इस गली का 'महर्षि दयानंद स्ट्रीट' नामकरण हुआ है ।

श्री मुनीन्द्रनाथ वर्मा (1998, pp 81) के कथनानुसार इस पत्र के संपादन से पंडित बेणीमाधो सतीराम भी जुड़े रहे और १९२४ से लेकर १९४० तक यह पत्र प्रकाशित होता रहा।

'मोरिशस आर्य पत्रिका' का हिन्दुओं के उत्थान में बहुत बड़ा योगदान रहा है। थोड़े ही समय में यह पत्र लोकप्रिय बन गया था। तभी सन् १९४० तक यह जीवित भी रहा। युगीन चेतना के पक्षधर 'मोरिशस आर्य पत्रिका' इस देश के हिन्दुओं को प्रगाढ़ निद्रा से जगाने में सफल रहा। स्वयं काशीनाथ इस पत्र के प्रथम लेख में पत्र-प्रकाशन का उद्देश्य रेखांकित करते हुए कहते हैं कि –

"आर्य पत्रिका का उद्देश्य स्वदेश के लिए प्रत्येक भारतवासी की ममता उत्पन्न करना होगा। यह पत्र अपनी जाति में कुसंस्कारों से उत्पन्न बुराइयों को दूर करेगा। जाति का सुधार करने के लिए किसी भी विषय को अछूता न छोड़ेगा। इस पर टीका-टिप्पणी करेगा। विशेषतः धार्मिकता का प्रचार करना इसका मुख्य उद्देश्य होगा । धर्म के नाम पर जितने अधर्म हो रहे हैं, उनपर अपनी लेखनी उठाने में यह पत्र कदापि न टिपकेगा, बल्कि ऐसे कार्यों में सदैव अग्रसर रहेगा। राजा-प्रजा सम्बंधित हानि-लाभ पर निष्पक्ष रूप से अपनी सम्मति प्रकट करेगा।" (पूरण पृ० ४०)

इस पत्र के माध्यम से पंडित काशीनाथ ने 'ग्रामीण मोटी भाषा' और 'टूटी-फूटी क्रियोली' मिलाकर खिचड़ी भाषा के स्थान पर हिन्दुओं को अपनी मातृ भाषा से प्यार करना सिखाया ।

वास्तव में हिन्दी भाषा (खड़ी बोली) को घर-घर पहुँचाने में तथा उसे परिष्कृत करने में जो सराहनीय कार्य आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं ने किया, कदाचित् कोई और ऐसा करने में सफल होता। हिन्दू धर्म के सशक्त प्रचारक, सुधारक, राजनीतिक सक्रियवादी पंडित काशीनाथ ने लाहौर के डी०ए०वी० कॉलेज में महात्मा हंसराज जैसे विद्वान् की छत्र-छाया में विद्या प्राप्त की थी । (इन्द्रनाथ २०१०, पृ० २१) सन् १९१० से लेकर १९१५ तक वे भारत में रहे और सिन्ध, बिलोचिस्तान तथा पंजाब में उपदेशक रूप में कार्यरत रहे । द्विवेदी युग और छायावादी युग के

साहित्यकारों ने जिस प्रकार खड़ी बोली आंदोलन को प्रभावपूर्ण रूप से चलाया, ठीक उसी प्रकार से मॉरीशस के विद्वानों ने विशेषकर जो भारत से शिक्षित होकर आये थे, पत्रकारिता के माध्यम से किया ।

'मोरिशस आर्य पत्रिका' का हिन्दू समाज के उत्थान में बड़ा ही सराहनीय योगदान है। इसने हिन्दुओं को बौद्धिक खुराक प्रदान की और उन्हें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति करने पर विवश कर दिया। देश के बहुसंख्यक हिन्दुओं को राजनीति का महत्त्व समझाने हेतु 'मोरिशस आर्य पत्रिका' तत्कालीन राजनीतिक नीतियों का निर्भीकता एवं ओजस्विता से खंडन करती थी। अपने लोगों को राजनीति में सक्रिय होने को प्रोत्साहित करती थी। जो हिन्दू राजनीति में पदार्पण कर चुके थे, उनके कार्यों की प्रशंसा कर उनकी गतिविधियों को रेखांकित करती थी।

'स्वतंत्रता' शीर्षक निबंध में श्री धनपत लाला तथा श्री राजकुमार गजाधर के चुनाव में भाग लेने और ग्राँ पोर चुनाव में श्री धनपत लाला की जीत की खबर छपी थी। (मोरिशस आर्य पत्रिका २१ जनवरी १९२६) यह श्री धनपत लाला की जीत नहीं थी, अपितु समस्त हिन्दू जाति की जीत थी। भारत में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन का भी विवरण समय-समय पर दिया जाता था। स्वामी दयानंद, स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा गांधी जैसे विद्वानों एवं राजनेताओं के उपदेश छपते थे। इस प्रकार 'मोरिशस आर्य पत्रिका' हिन्दुओं को देश-विदेश के राजनीतिक परिवेश से अवगत कराती थी और उन्हें राजनीति में सक्रियता दिखाने हेतु आमंत्रित करती थी ।

'मोरिशस आर्य पत्रिका' की चेतना समाज-परक भी थी। सदियों से हिन्दू समाज को दीमक बनकर चाट रही सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध इस पत्र ने लड़ाई लड़ी। यहाँ के हिन्दू शिक्षा के क्षेत्र में शून्य थे। सामाजिक कुप्रथाओं ने हर क्षेत्र में हिन्दुओं को पिछड़े रहने पर मजबूर कर दिया था। जातिवाद, ब्राह्मणवाद, बाल विवाह, भेद-भाव आदि सामाजिक विकृतियों का 'मोरिशस आर्य पत्रिका' ने खुलकर निंदा की । हिन्दुओं को इन कुरीतियों व कुप्रथाओं से दूर करने में इसने अमूल्य भूमिका निभायी ।

'मोरिशस आर्य पत्रिका' स्त्री-उद्धार की भी हिमायती थी । नारी अन्त्यज नहीं है, अपितु पुरुषों से भी उसका स्थान ऊँचा है - यह सिद्ध करने में इस पत्रिका ने कोई कसर बाकी उठा नहीं रखी थी। नारी शिक्षा महत्त्वपूर्ण ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है – हर अंक में इससे संबंधित प्रभावशाली लेख छपते थे। मॉरीशस के हिन्दुओं का ही नहीं, बल्कि पूरे संसार का उपकार नारी उद्धार से जुड़ा हुआ है। नारी पुरुष की अर्द्धांगिनी है, सहचरी है, पूरक है । नारी के बिना पुरुष का कोई अस्तित्व नहीं है – इस समानता की भावना को उदार हृदय से आत्मसात करने की सलाह 'मोरिशस आर्य पत्रिका' सर्वदा दिया करती थी। एक उदाहरण द्रष्टव्य है :-

"यदि पुरुष राजा है तो स्त्री उनके मंत्री अवश्यमेव होना चाहिए, जिस प्रकार नीतिज्ञ राजा और सुयोग्य मंत्री हो तो राज्य स्वर्गधाम बन जाता है, इसी प्रकार गृहपत्नी और गृहपति दोनों मिलकर सम्मति से गृहस्थाश्रम को नीति तथा धर्मानुसार चलावें तो इसमें किंचित भी संदेह नहीं कि गृहस्थाश्रम स्वर्गधाम बन जाएगा ।" (मोरिशस आर्य पत्रिका, ३० जुलाई १९२६)

बाल विधवा जैसी कुप्रथा पर आधारित एक उदाहरण उद्धृत है :-

"दुखी बाल विधवा बिगोती रहें ।
बिलखती रहें; प्राण खोती रहें ।।
मगर ब्याह उनका रचाना नहीं ।
सुकुल को कलंकी बनाना नहीं ।।
.....
लूटें देवियाँ पास जाना नहीं ।
झोंके भाड़ में पर बचाना नहीं ।।
दिखाना न बल की कहीं बानगी ।
सुरक्षित रहे मर्द ! 'मर्दानगी' ।।

('मोरिशस आर्य पत्रिका' शुक्रवार २१ मई १९२६)

'मोरिशस आर्य पत्रिका' हिन्दू समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं - जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोज़गारी, गरीबी आदि का चित्रण करती थी और उनका समाधान भी प्रस्तावित करती थी। वास्तव में 'मोरिशस आर्य पत्रिका' एक पत्र थी। यह पत्र हिन्दू संस्कृति का स्वस्थ रूप दर्शाने में कटिबद्ध था। मानव मूल्यों तथा सामाजिक मूल्यों की प्रतिस्थापना करना सदैव इसकी चुनौती रही । उचित और अनुचित का ज्ञान कराकर हिन्दुओं को अपने कर्त्तव्यों का बोध कराने में यह पत्र प्रयत्नशील रहा। साहित्यिक विधाओं को विकसित करने में भी 'मोरिशस आर्य पत्रिका'

संघर्षरत रही। इसमें कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण, लघु जीवनियाँ, निबंध, व्यंग्य आदि, छपते थे। *"और एक ही आशा', 'आनंद की ओर', 'आशीर्वाद' आदि आकर्षक शीर्षक वाली शिक्षाप्रद तथा आनंदप्रद कहानियाँ छपती थीं ।"* (अरूण १९९७, पृ० १४३)

हिन्दुओं की दयनीय परिस्थिति को सुधारकर उन्हें उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने में 'मोरिशस आर्य पत्रिका' ने अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इसका योगदान स्मरणीय रहेगा ।

पंडित काशीनाथ किष्टो

आर्यवीर : १९२९

अभी 'मोरिशस आर्य पत्रिका' अपनी पराकाष्ठा तक पहुँच ही पायी थी कि शुक्रवार ३ मई १९२९ से 'आर्य वीर' का प्रकाशन हिन्दी तथा अंग्रेज़ी में प्रारम्भ हो गया । चार पृष्ठोंवाला यह पत्र साप्ताहिक था और श्री इसरापेन मुच्यें इसके मालिक थे। यह पत्र २२ फॉक्वार स्ट्रीट, पोर्ट लुई में मुद्रित तथा प्रकाशित होता था। इसका आदर्श वाक्य था **'सत्यमेव जयते नानृतम्'**। प्रह्लाद रामशरण (२०१२, पृ० २१) के अनुसार 'आर्यवीर' के संपादक थे और इन्होंने ही जीवन पर्यन्त अर्थात् १९४७ तक इसका संपादन किया । 'आर्यवीर' के प्रथम अंक के दूसरे पृष्ठ पर पत्र का उद्देश्य रेखांकित करते हुए पं० काशीनाथ लिखते हैं –

"स्वजाति, देश और धर्म की रक्षा हो। ..... स्त्री शिक्षा का अत्यन्ताभाव है, जिसके कारण जाति उस पंगु की तरह है, जोकि एक दुर्गम पर्वत के ऊँचे शिखर पर चढ़ना चाहता है । अतः स्त्री शिक्षा का प्रचार करना हमारा दूसरा उद्देश्य होगा। .... नैतिक शासनानुशासन संबंधित बातों से भी यथातथ्य राजा, प्रजा को सचेत करना, हमारा उद्देश्य होगा ..... सामाजिक सुधार हमारा कर्तव्य होगा।" (आर्यवीर, ३ मई १९२९)

संपादक महोदय के उद्घाटित उद्देश्य को पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि 'आर्यवीर' सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के सुधार निमित्त प्रकाशित होता था। इसमें राजनैतिक विद्रूपताओं पर टिप्पणियाँ एवं तीखी बातें प्रकाशित होती थीं। देश के आर्थिक परिवेश पर व्यंग्यपूर्ण शीर्षक वाले लेख छापे जाते थे, यथाः – 'घर पर कर' लेख का प्रारंभ निम्न प्रकार से हुआ है :- *"इस दुर्भिक्ष के समय जबकि दरिद्रता का भारी प्रकोप चारों ओर टापू पर छाया हुआ है, ऐसे कठिन अवसर पर सरकार मकानों पर टाक्स चढ़ा रही है ।"* (आर्यवीर, ३ मई १९२९)

'आर्यवीर' में तार द्वारा भारत से प्राप्त खबरें भी छपती थीं। देश की सामाजिक विकृतियाँ जो सामाजिक गतिशीलता में बाधा का काम कर रही थीं, जैसे कि चोरी-डकैटी, आत्महत्या, दुर्घटना, बहरिया पूजा में अनेक असहाय पशुओं का वध आदि पर समाचार छपते थे।

अतः कुरीतियों, कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, रूढ़ियों तथा गलत मान्यताओं को हटाने में 'आर्यवीर' ने डटकर संघर्ष किया । मार्मिक भाषा में 'आर्यवीर' के लेख अति आकर्षक होते थे। लेखों के भाव गंभीर होते थे । लेखों के शीर्षक के चंद उदाहरण निम्न प्रकार से हैं – 'सचेत हो जाओ', 'चेतावनी', 'जात्युन्नति', 'क्यों मरने से डरते हो?', 'छुआछूत की भूत', 'सत्य', 'महिला सुधार मंडल', 'मातृभाषा' आदि । (आर्यवीर, १९२९)

मानव तथा नैतिक मूल्यों तथा समाज सुधार पर आधारित लेखों का कोई अभाव न था । साहित्यिक लेखों की भी कमी न थी। हास्य लेख, कविताएँ, कहानियाँ, जीवनियाँ, संस्मरण, खूब छपा करते थे। इन्द्रनाथ (२००३ पृ० १६५) के अनुसार पं० काशीनाथ ने 'आर्यवीर' का संपादन कर सैद्धांतिक मर्यादा का प्रतिपोषण किया और लेखकों को लिखने के लिए प्रेरित किया। वे हिन्दी भाषा को मातृ-भाषा कहा करते थे। देश के कोने-कोने में हिन्दी पाठशालाओं तथा कन्या पाठशालाओं के खुलने की सूचनाएँ भी 'आर्य वीर' में छपती थीं। संक्रामक बीमारियों को फैलने से रोकने के लिए साफ़-सुथरा रहने तथा खान पान में सुधार लाने की सलाह 'आर्यवीर' देता था। तिज-त्योहार, पूजा-व्रत आदि को सुसंस्कृत ढंग से मनाने की भी शिक्षा आर्यवीर में छपती थी। पंडित काशीनाथ अपनी खुद की जीवनी भी 'आर्यवीर' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित करते थे । व्यापार तथा वाणिज्य के बारे में भी सूचनाएँ छपती थीं। इस प्रकार यह कहना सर्वथा उचित होगा कि गहरी नींद में सोए हिन्दुओं को झकझोड़ने में 'आर्यवीर' ने सशक्त भूमिका निभायी है । **क्रमशः**

श्रावणी महोत्सव का आरम्भ

पिछले वर्षों की तरह इस साल भी श्रावणी महोत्सव का शुभारम्भ आर्य सभा के भवन में धूमधाम से गत मंगलवार दि० १९/०७/१६ को प्रातः ९.३० बजे यज्ञ से हुआ। कार्य का संचालन सभा के महा मंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम ने किया । स्वागत भाषण सभा के द्वितीय प्रधान श्री बालचन्द जी ने किया । इन महानुभावों द्वारा मौक़े के सन्देश प्रस्तुत किये गये । वे हैं पुरोहित मण्डल के अध्यक्ष पंडित यशवन्तलाल चूड़ामणि, वेद प्रचार समिति के मन्त्री देवेन्द्र रिकाई एवं डा० उदयनारायण गंगू एवं श्रीमती धनवन्ती। सुन्दर भजन सभा के पुरोहित एवं पुरोहिताओं ने पेश किये जिन्हें सुनकर श्रोतागण झूम उठे ।

महा सचिव डा० विनोद कुमार मिश्र ने श्री नरेन्द्र घूरा द्वारा फ्रेंच भाषा में अनूदित चन्द वेद मंत्रों के संग्रह का लोकार्पण किया और लगे हाथ एक लघु भाषण भी दिया ।

कार्यक्रम सभी दृष्टि से सफल रहा। अब २० जुलाई से पूरे महीने श्रावणी यज्ञ चलेगा ।

एस. प्रीतम

कालजयी संत का कालजयी ग्रन्थ - सत्यार्थ प्रकाश

दयानन्द एक असामान्य साधु, संन्यासी थे। वे यदि चाहते तो एकान्त में जाकर अपनी आत्मिक उन्नति के लिए साधना करते जैसे भारत में कितने अन्य स्वामी संन्यासी करते थे और आज भी कर रहे हैं। कोई तरह तरह के चमत्कार करते हैं; कोई सिंह के साथ निडर वास करता है तो कोई पानी पर चलकर इस पार से उस पार चला जाता है, पर स्वामी जी ने सारी दुनिया की उन्नति चाही और आर्य समाज बनाकर लिख भी दिया सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।

आर्यसमाज की स्थापना से पहले सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन किया। सत्यार्थप्रकाश की शुरुआत भगवान् के गौणिक नामों की व्याख्या द्वारा की । लोग ईश्वर के नाम को लेकर झगड़ रहे थे। उन्होंने वेद मंत्र लेकर समझाया कि ईश्वर एक है उनके नाम अनेक हैं। नामों को लेकर झगड़ना मनुष्य को शोभा नहीं देता । समय ज़ाया होता है; वैमनस्य बढ़ता है, जिस उद्देश्य से परमात्मा ने हमें इस भौतिक संसार में भेजा है कर्म करने के लिए वह हो नहीं पाता। ईश्वर ने आदेश दिया है – **संगच्छध्वं संवद्धवं संवो मनांसि जानताम् । देवा भागं यथापूर्वे संजनाना उपासते।।**

अर्थ - *प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो।*
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।।

एस. प्रीतम

आर्य समाज के दस नियम

TEN PRINCIPLES OF ARYA SAMAJ

१. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
The first efficient cause of all true knowledge and all that is known through knowledge is Parameshwara – The Highest Lord, i.e. God.

२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
Ishvara (God) is Existent, Intelligent and Blissful. He is Formless, Omniscient, Omnipotent, Just, Merciful, Unborn, Endless, Unchangeable, Beginningless, the Support of all, the Master of all, Omnipresent, Immanent, Unaging, Immortal, Fearless, Eternal, Holy and the Maker of all. He alone is worthy of being worshipped.

३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।
Vedas are scriptures of true knowledge. It is the first duty of the Aryas to read them, teach them, recite them and hear them being read.

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।
One should always be ready to accept truth and give up untruth.

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये ।
One should always do everything according to the dictates of dharma, i.e. after due reflection over right and wrong.

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
The prime object of this society is to do good to the whole world, i.e. to uplift the physical, spiritual and social welfare of all.

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये ।
Let thy dealing with all be regulated by love and justice, in accordance with the dictates of dharma.

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ।
One should promote vidya (realisation of subject and object) and dispel avidya (illusion).

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।
One should not be content with one's own welfare alone, but should look for one's own welfare in the welfare of all.

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें ।
One should regard one's self under restriction to follow altruistic ruling of society, while in following rules of individual welfare all should be free.